समय एक शब्द भर नहीं है

समय एक शब्द भर नहीं है

धीरेन्द्र अस्थाना



राधाकृष्ण

प्रथम संस्करण 1981



प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2 अंसारी रोड दरियागंज
नई दिल्ली 110002

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
दिल्ली 110032

केवल
सुरेश उनियाल के लिए

जो मुझे मेरी तमाम-तमाम
कमजोरियों, बेहूदगियों और
मूर्खताओं के बावजूद प्यार करता है।

यह जो उतरता हुआ सुस्त सा अँधेरा उसके चेहरे पर दिखायी देता है यह उसे समय ने दिया है।

समय एक शब्द भर नहीं है।

अगर समय तुम्हारी बगल म होकर गुजर जाय तो तुम्ह मुस्तकिल उदासी दे सकता है।

मुस्तकिल उदासी चहरे का साँय साँय करत रेगिस्तान म तब्दील कर देती है।

और यह तुम अच्छी तरह म जानते हो कि रेगिस्तान अगर दिल से निकल कर चेहरे पर आ बैठे तो जिन्दगी सरे से फिसल जाती है।

जिन्दगी के फिसल जाने के बाद तुम्हारे पास आत्महत्या क तक क अलावा भी कुछ बच सकता है क्या ?

और आत्महत्या तुम कर नही सकते क्योंकि आत्महत्या के लिए जिस कलेज की जरूरत पडती है वह तुम्हारे पास कहाँ है ?

अगर आत्महत्या कर लेन वाला कलेजा तुम्हारे पास होता तो तुम अब तक हत्याएँ न कर देत ?

अगर तुमने आत्महत्या या हत्या करने की चाहना बहुत शिद्दत म कभी की होती और असफल रहे होते तो उसके चेहरे पर उतरत इस सुस्त-से अँधेरे के साथ तुम्हारा रिश्ता अपरिचय और तटस्थता का न होकर सवेदना के स्तर पर अतरगता तक फैला हुआ होता और इस अँधेरे के विरुद्ध एक लबी चीख तुम्ह अपने भीतर गूँजती मचलती महसूस होती मगर ।

मगर ऐसा नहीं है, क्योंकि उसम और तुममें कोई बुनियादी फर्क न

होते हुए भी अन्तर का एक पतला-सा सूत्र तुम्हें उससे अलग-थलग फेंकता है।

उसने जो सोचा उसे आकार दिया और अजाम लगे हाथ झेला, और तुम ?

जहाँ तक तुम्हारा सवाल है तो साफ कहूँ ?

तुमने जब भी, जो भी सोचा, उसे तत्काल स्थगित कर दिया। जो भी चाहा उसे भूल गये। चाहतों को स्थगित करते रहने का अटूट सिलसिला तुम्हारे नाम और तुम्हारे व्यक्तित्व और तुम्हारे चरित्र का पर्याय है।

तुम उसे नही छू सकते।

तुम कुढने क्यो लगे ?

यह माना कि तुम पढाकू हो, बौद्धिक हो, इस किस्से या इतिहास या बकवास के पाठक हो, मगर इसका यह अर्थ तो नही है कि तुम्हारी कमजोरियो पर कोई बात ही न की जाये और तुम्हे यह हक दिया जाये कि दूसरो की कमजोरियो पर तुम नाक-भौह सिकोडते रहो। क्या एक भी शब्द मैंने गलत कहा है ? अच्छा, खुद ही पुनर्विचार करना।

करना तो दर किनार, तुमने कभी पूरी ईमानदारी से, अपनी एक-एक साँस के साथ आदमी के सपनो को कुचल देने वाले लोगो को कत्ल कर देने का सपना अपने भीतर कभी जवान होने दिया है ? अपनी चाहतो को स्थगित कर देने के सिलसिले मे इतनी महत्त्वपूर्ण जरूरत को अनदेखा करते हुए क्या तुम अनायास ही कातिलो के पक्ष मे जाकर खडे नही हो गये ? अपने 'व्यक्ति' की चाहतो को स्थगित कर देने की अपनी निजी स्वतत्रता का इस्तेमाल करते हुए तुमने दूसरो की स्वतत्रता का दमन अनायास ही नहीं कर दिया क्या ? खैर !

तुम नायक नही हो। दुख इस बात का है कि तुम खलनायक भी तो नहीं हो। खलनायकों की भी अपनी एक पक्षधरता होती तो है। मगर तुम ?

तुम्हारे लिए एक शिखडी शब्द का इस्तेमाल करते हुए बहुत तकलीफ हो रही है, मगर तुम ही बताओ, परिस्थितियो की प्रतीक्षा करने

वाले लोग आखिर कौन होते है?

कौन होते हैं वो लोग जो पक्ष मे होते है और नही होते? जा विरोध मे नही होते मगर होते है? यह अस्पष्टता क्या है और किसकी है? और आखिरकार इस अस्पष्टता की जडें कहाँ से पनप रही हैं?

तुम शकालू हो और जब सडको पर आतक का सन्नाटा उतरने लगता है तो तुम भाग कर मकानो मे बंद हो जाते हो। नायक ऐसा नही करते। वे चुनाव करते है। तुम्हारे भीतर चुनाव की समझ मौजूद है क्या?

तुम तो चुनाव के नाम पर मतदान करते हो और हर बार उन्ही लोगो का राजतिलक करते हो जिनकी तिजोरी का चोर-दरवाजा राज महल और ससद जाने वाले मार्ग की तरफ खुलता है। नही नही विरोध मत करो। तुम बात को समझे बिना विरोध कर रहे हो।

दरअसल, तुम्हारा विरोध जनतत्र के तमाशे को न समझ पाने से पैदा हुआ है।

तुम प्रतिनिधियो का ही तो चुनाव करते हो न? और प्रतिनिधि जिस रास्ते से होकर ससद जाते है उसी रास्ते पर मुल्क की कुल दौलत के बडे बडे हिस्सेदारो की तिजोरियो के चोर-दरवाजो के सामने से गुजर कर जब ससद पहुँचते है तब तक व तुम्हारे नही तिजोरियो के नुमाइन्दे बन चुके होते हैं।

तुम सभवत इसी हकीकत को स्वीकार नही करोगे। मत करो। बात तुम्हारी है ही नही। पाँचवी से लेकर विश्वविद्यालयो की ऊँची ऊँची डिग्रियो को लपक लेने के दौरान जो लोग 'जनतत्र-जनतत्र-जनतत्र' की तोता रटन्त करते आये हों उनकी बात ही नही है।

बात तो उसकी है।

कहते है कि उसके दिमाग की कोई एक नस शुरू से ही नही है। इस बात की घोषणा सबसे पहले उसके पिता ने बहुत गभीर होकर समूचे परिवार मे की थी और कई रातें जागकर अपने सबसे बडे लडके के बरबाद दिमाग की चिन्ता मे डूबते-उतराते रहे थे।

यह तब की बात है जब एक रोज वह अपना कॉलेज छोडकर दन

दनाता हुआ कांग्रेस कमेटी के दफ्तर में घुस गया था और नगर-अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठे अपने पिता से चीख कर बोला था कि इन्होंने उसका इतना अधिक बेहूदा नाम रखकर उसकी भावनाओं पर चोट पहुँचायी है कि अगर उन्हें नाम रखने की तमीज नहीं थी तो किसी अक्लमन्द आदमी से सलाह ले लेते, कि अब वह इस सड़ियल नाम को छोड़कर अपना नाम खुद रख रहा है, कि यह एक बहुत बड़ा मजाक है कि आदमी को अपना नाम तक पहले से तय हुआ मिलता है, कि आजादी का अर्थ तब तक बेमानी है जब तक आदमी अपने अस्तित्व को अपनी इच्छा से आकार देने के लिए स्वतन्त्र न हो।

पिता अवाक् रह गये थे और उनका शक यकीन में बदल गया था। घटना चूंकि कांग्रेस कमेटी के दफ्तर में घटी थी, इसलिए उन्होंने इसे गंभीरता में लिया था। एक बारगी तो उनके जेहन में आया था कि थप्पड़ मार-मार के साले को बाहर खदेड़ दें, लेकिन नगर-अध्यक्ष की गरिमा और प्रतिष्ठा के साथ-साथ दीवार पर लगी महात्मा गांधी की दयावान तसवीर ने उनकी इच्छा के आगे बैरियर लगा दिया था और वे अपने गुस्से में घिरे भीतर से थर-थर कांपते रहे थे और बाहर से महात्मा गांधी की तरह मुसकराते रहे थे। मुसकराने की प्रक्रिया के दौरान ही उन्होंने उसे समझाना चाहा था कि पंडित जी ने उसकी राशि निकाल कर जो नाम तय किया था वही नाम उन्होंने रख दिया था। उसकी राशि 'सिंह' थी और उसका नाम 'ट' से रखा जाना चाहिए था, इसलिए उन्होंने उसका नाम टेकचन्द रख दिया कि उनके खानदान में नाम रखने की रस्म कुलपंडित द्वारा ही सम्पन्न कराने की परम्परा है।

उसने पिता के चेहरे पर चढ़े महात्मा गांधी की मुसकान वाले खोल का बेरहमी से चीथड़े-चीथड़े करते हुए बिफर कर कहा था कि वह उनके खानदान, पंडित जी और परम्पराओं को अपने जूते की नोक पर रखता है और इस सड़ियल नाम टेकचन्द से उसे उतनी ही नफरत है जितनी खद्दरधारी कांग्रेसियों से, कि उसने अपना नाम भुवन रख लिया है भुवन किशोर।

उसके इस वाक्य ने तेजाब का-सा असर किया था। कांग्रेस-कमेटी

के दफ्तर मे बैठे तमाम छोटे-मोटे पदाधिकारियो के चेहरो पर पडा मुसकान, धीरज और अहिंसा का लवादा गल-गल कर उतरने लगा था और उन्होने नगर-अध्यक्ष की प्रतिष्ठा को नकारते हुए अपने भीतर जमी तीखी, बदबूदार नदी के दहाने खोल दिय थे। मामले की विगड़ता देख वह ढेर सारा थूक दफ्तर मे बिछी शानदार दरी के बीचोबीच उगल कर बाहर भाग आया था।

उसकी इस हरकत पर पिता का दिमाग भन्ना खा गया था और उन्हे यकीन हो गया था कि उसे लेकर उन्होने जो सपने बुने है, टूटना ही उनका सच है, कि अब उनका लडका मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट तो कभी नही बन पायेगा, कि उसके दिमाग की कोई एक नस जरूर-जरूर ही नही है।

इस बात का सन्देह पहली बार उन्हे तब हुआ था जब अक्षर-ज्ञान के समय घर पर पढाने आने वाले मास्टर साहब का सिर उसने अपनी पत्थर की सलेट से फोड डाला था। बात की तह मे जाने पर उन्हे पता चला था कि अक्षर-ज्ञान की अपनी पढाई के दौरान उसने मास्टर साहब से पूछा था, " 'अ' से पहले क्या आता है ?"

"अबे तू पागल है क्या ?" मास्टर ने जवाब दिया था।

"पागल होगे आप,' उसने पलट कर कहा था, "मैं जो पूछ रहा हूँ उसका जवाब क्यो नही देते ? मैंने पूछा है कि 'अ' से पहले क्या होता है ?"

मास्टर साहब का सिर भन्ना गया था। अपने शिष्य के विलक्षण प्रश्न से वे पहले तो चकित रह गये। फिर क्रोध मे उफन कर उन्होंने एक जबरदस्त चाँटा उसके गाल पर जड दिया और फुफकारते हुए बोले, 'ये होता है।"

"ये भी होता है !" उसने परम्पराओ को अस्वीकार करते हुए प्रति-उत्तर दिया था और उछल कर अपनी पथरीली सलेट के कोने मे मास्टर साहब का सिर तोड दिया था। ऐसा करने के बाद वह भयभीत नही हुआ था और न ही मास्टर साहब के सिर से बहते खून को देखकर उसे अप-राध-बोध हुआ था। वह विजेता की तरह मुसकराया था और मास्टर

साहब को कमरे में छोड पूरी निश्चिन्तता और सहजता मे बाहर आकर पानी पीने लगा था।

ऐसे पागलो को मैं नही पढा सकता, साहब!" मास्टर ने कहा था और अपने टूटे सिर को थामकर चुपचाप चला गया था।

इस घटना से पिता के दिमाग म सन्देह का एक सूत्र जन्मा था कि उनका लडका शायद एबनॉर्मल है और वह कही भी एडजस्ट नही हो पायेगा।

कहते है कि बी० ए० करने के बाद एक रात वह सबको सोता छोड अपने सुविधा-सम्पन्न घर का दरवाजा खोल, गली के अँधेरे सन्नाटे मे चुपचाप उतर आया था और फिर वापस कभी नही लौटा।

तब भी नही जब उसके पिता को किसी नक्सलवादी ने रात की स्याही मे निर्ममता मे खत्म कर दिया था।

कहत है कि इस कत्ल से उसका चेहरा कही से भी नही टूटा था और नक्सलवादियो के प्रति उसके दिल मे प्रतिहिंसा का भी कोई भाव नही उग पाया था। उसके लिए पिता का कत्ल जैसे एक खबर थी और इस खबर से जैसे उसका कोई निजी रिश्ता ही नही था। रोज होते कत्लो की तरह उसने इस खून को भी उनम शुमार किया था और आग बढ गया था।

कहते हैं कि नक्सलबाडी के सशस्त्र किसान विद्रोह के दिनो मे उसका एक भूमिगत नक्सली दोस्त कलकत्ते से फरार होकर बचता-बचाता एक रात उसके शहर मे उसके घर मे आकर टिका। टिक जाने के बाद दोस्त को मालूम हुआ कि उसके दोस्त का पिता आजकल शहर की कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष है। अपनी गलती पर सिर धुनते हुए उसने सुबह मुँह-अँधेरे ही खिसक लेने का निर्णय किया। रात-भर दोनो ने राजनीति पर कोई बात भी नही की, क्योकि पिता का चरित्र कमरे मे छाया हुआ था, लेकिन इस एहतियात के बावजूद सुबह तीन बजे जब वह नक्सली दोस्त घर छोडने की तैयारी मे था, पुलिस के द्वारा पकड लिया गया। बाद म सुना गया कि उस दोस्त को जेल मे अमानवीय यातनाएँ देकर मार डाला गया।

जिस दिन ह्विसकी के नशे म डूबते-उतराते पिता ने उस नक्सलवादी की मौत का ऐलान घर मे किया और माँ को बताया कि आगामी चुनाव म पार्टी का टिकट उन्ह ही मिलने जा रहा है, उस दिन उसके बी० ए० फाइनल का रिजल्ट आया था जिसम वह सैकिन्ड डिवीजन से पास था। उसने अपने पास हो जाने की सूचना देन क बजाय नशे मे धुत्त अपने पिता का कॉलर पकड लिया था उनका चेहरा अपनी आँखो के ऐन सामने किया था और उनके चेहरे पर पूरी नफरत से थूक कर बोला था, "तुम इसी लायक हो कमीने आदमी !"

उसकी माँ ने अचरज मे काप कर यह दृश्य देखा था और अपने कमरे म जाकर रोने लगी थी।

नशे म डूबे पिता अपने चेहरे पर उसका थूक लिये अपने पलग पर औंधे मुँह गिर पडे थे। बेहोश होने से पहले अपनी टिमटिमाती चेतना मे उन्होंने एक कठोर निर्णय ले ही लिया था कि अगली सुबह इस जुर्म की सजा वे अपने लडके को देंगे, लेकिन वह उसी रात अपना घर छोड कर बाहर आ गया था।

यह सन् उन्नीस सौ उनहत्तर की बात है जब उसकी पाँच सात कहानियाँ बहुचर्चित होकर साहित्य के अखाडे म उतर चुकी थी और नक्सलवादी का शक भर होने से आदमी को लाश म तब्दील कर दिया जाता था।

घर छोड कर वह सीधा देश की राजधानी म पहुँचा था। राजधानी, जिस कब्जे म करने की लडाई नक्सलवादी मे शुरु होकर जेलो और जगलों म पहुँचकर स्थगित हो गयी थी। और जिस लडाई के बडे-बडे सूरमा हरिद्वार और ऋषीकेश म जाकर अध्यात्मवादी हो गये थे या फिर कांग्रेस क झडे तले आकर 'सैल्फ क्रिटिसिज्म' के अमोघ अस्त्र से अपना बचाव करते हुए समूची कौम क मुर्दा हो जाने की घोषणा करने लगे थ।

यह वह दौर था जब देश के अन्य हिस्सो के लोग नक्सलवादी के समर्थन म उठन लग थे और उसकी विस्तृत जानकारी के लिए उत्सुक होन लगे थ।

यह वह दौर था जब सरकार-प्रदत्त पालतू लेखक नक्सलवादी आन्दो-

नन का डकैती और लूटमार की घटनाओं से जोड़ देने की कोशिश में रंगीन पत्रिकाओं के पन्ने के पन्ने रंग जा रहे थे और नौजवान लेखकों का छोटा सा तबका कलम और बन्दूक का आपसी रिश्ता पूरक का रिश्ता घोषित करके भूमिगत पर्चे और पत्रिकाएँ देश भर में वितरित करने के लिए लाम-बन्द हो रहा था।

और यही वह दौर भी था जब अगली पंक्तियों के क्रांतिकारी नायक एक-दूसरे को संशोधनवादी प्रतिक्रियावादी और कठमुल्लावादी कह कर मोटी मोटी किताबों में भारी भरकम शब्दावली में आरोप प्रत्यारोप उछाल रहे थे और पुलिस चुन चुन कर आन्दोलनकारियों या आन्दोलन समर्थकों को मुठभेड़ के नाम पर गोलियों से उड़ा रही थी।

कहते हैं कि जिस प्राइवेट कंसर्न में राजधानी आने के बाद उसने पहली नौकरी ज्वाइन की वहां से ठीक पांचवें महीने उसे निकाल दिया गया। कारण एक वही था—उसके दिमाग की किसी एक नस का सिरे से ही अनुपस्थित होना।

दफ्तर में एक ही सार्वजनिक बाथरूम था और बॉस से डांट फटकार खाने के बाद कुछ कुंठित किस्म के कर्मचारियों ने बाथरूम की दीवारों पर आड़ी तिरछी मार में पेशाब करके पीली-पीली लकीरें बना डाली थीं। ये लकीरें इतने वीभत्स तरीके से आपस में गुथी हुई थीं कि बाथरूम में घुसते ही पेट का पित्त एकाएक उछल कर हलक में फँस जाता था और पेशाब रुक रुक कर होने लगता था। उसे इस बाथरूम से बहुत ज्यादा तकलीफ थी क्योंकि प्रत्येक घंटे डेढ़ घंटे बाद उसे बाथरूम में पेशाब करने के बहाने बीड़ी पीने जाना पड़ता था। सीट पर बैठकर यानी कार्यालय में धूम्रपान सख्त रूप से मना था। और बाथरूम की हालत यह थी कि बीड़ी के धुएँ के साथ ही साथ भभकार छोड़ती तीखी दुर्गंध भी फेफड़ों में बेरोक टोक घुसती थी और उसे भय था कि बीड़ी के धुए से फेफड़ों में चाहे कैंसर या तपेदिक न भी हो मगर इस पेशाब की दुर्गंध से जरूर ही एक-न-एक दिन उसके फेफड़े चीखते हुए फट जायेंगे। बाथरूम से नाक दबाकर बाहर निकलते हुए वह गिनकर डेढ़ सौ गालियां उन कर्मचारियों को दिया करता था जो अपनी कुंठाओं का बदला बॉस से लेने के बजाय बाथरूम की मौन

दीवारों से लिया करते थे। इस वाक्यम को लेकर उत्पन्न तनाव से उसका चेहरा भिचा-भिचा और ऐंठा-ऐंठा रहन लगा था और इस वाक्यम के ही कारण कई बार उसन बीडी छोड देन का भी निर्णय किया था, मगर यह सोचकर कि पेशाब न करन का निर्णय तो वह कर नही सकता, उसन बीडी छोड देने का निर्णय भी स्थगित कर दिया।

मगर एक रोज अचानक ही उसका ऐंठा हुआ चेहरा चमत्कारिक रूप से तनावहीन होकर सहज हो आया।

भक्क से उसका मुँह राहत वाली मुद्रा मे खुल गया और उसमें से सिलसिलेवार तेज ठहाके निकल-निकल कर समूचे दफ्तर की चेतना पर ठकाठक बजने लगे।

पूरा दफ्तर जैसे एक बेहद लम्बी नींद के बीच से हडबडाकर जाग गया और अपनी-अपनी फाइलों से फटाक से बाहर निकल आया। दुछत्ती पर बने एकाउंट सैक्शन के लोग तुरन्त ही रुपये-पैसों के समीकरण से कूद कर बाहर भागे और खटाखट सीढियाँ उतरकर नीचे चले आये, मगर उलटे पाँव वापस भी चढ गये और छत के ऊपर खडे होकर नीचे झांकने लगे।

यह एक ऐतिहासिक घटना थी। दफ्तर के सबसे पुराने एक क्लर्क, जो वहाँ बीस साल से क्लर्क था, की आँखें आश्चर्य के मारे बाहर निकल गयी थी। जब बॉस के पिता इस दफ्तर के मालिक थे, ठहाके तो तब भी नही गूँजे थे। हालांकि बॉस के पिता बॉस की तरह जालिम नही थे।

उसके ठहाके अभी तक गूँज रहे थे। उसके ऐन सामने बैठा असिस्टैन्ट सेल्स डायरेक्टर अपने एक हाथ की मुट्ठी को दूसरे हाथ की हथेली पर पीटता हुआ इन्तजार कर रहा था कि उसके ठहाके रुकें तो वह अनुशासनहीनता के लिए उसका जवाब तलब करे।

इतने मे पेशाब करने गया बॉस वापस आ गया और अचरज तथा क्रोध के सम्मिलित भावों को एकसाथ थामे उसके ऐन सामने आकर ठिठक गया। बॉस को सामने देखकर उसके ठहाके तो रुक गये, मगर मुसकान नही जा सकी। बॉस ने गंभीर होकर अपने होठ गोल कर लिये थे। बॉस के गोल होठों को देखकर असिस्टैन्ट सेल्स डायरेक्टर का मुँह सूख गया।

वह वॉस के गोल होठो की महिमा जानता था। अब वह स्वय को ही कोसने लगा कि उसने ठहाको के रुकने की प्रतीक्षा क्यो की? क्यो नही उसने सामने बैठे बदतमीज छोकरे को अपनी कडक आवाज मे डपट दिया? अब वॉस का गुस्सा लडके के साथ-साथ उस पर भी उतरेगा।

वॉस के होठ अभी तक गोल थे और वह हैरानी से सामने बैठे उस लडके को लगातार तक रहा था जिसने उन्मुक्त ठहाके लगाकर उसके सात वर्ष के कठोर एडमिनिस्ट्रेशन की धज्जियाँ उडा दी थी और जो इतना गुस्ताख था कि दफ्तर के एकछत्र मालिक के ऐन सामने खडे रहने के बाव जूद बैठा हुआ था। न सिर्फ बैठा हुआ था, वरन धीमे-धीमे मुसकरा भी रहा था।

वॉस ने उसकी आँखो मे सीधे देखते हुए आहिस्ता से कहा, "आई थिंक, यू आर मैड।" फिर वह पूरी ताकत से दहाडा "तुम हमारे दफ्तर मे क्या कर रहे हो। बास्टर्ड! गो टु हैल!" फिर उसी गुस्से को थामे वॉस एका-एक पलटा और असिस्टैन्ट सेल्स डायरेक्टर से बोला, "क्यो, यही है आपका एडमिनिस्ट्रेशन और आप सेल्स डायरेक्टर होने की ख्वाहिश रखते है!

असिस्टैन्ट सेल्स डायरैक्टर गरदन नीची किये रहा। उसकी समझ मे ही नही आ रहा था कि वह वॉस को क्या जवाब दे?

इसका हिसाब करो तुरन्त।" वॉस ने निर्देश दिया और धडधडाता हुआ अपने केबिन मे प्रविष्ट हो गया।

"इन आजकल के लौडो को नौकरी करनी कभी नही आयेगी।" असिस्टैन्ट सेल्स डायरेक्टर बडबडाया और इन्टरकॉम के द्वारा एकाउंट सेक्शन को कुछ निर्देश देने लगा। इसके बाद उसने सामने बैठे उस बेवकूफ लडके को एकाउंट सैक्शन मे जाने को कहा और अपना माथा पकड कर बैठ गया।

वॉस के क्रोध और असिस्टैन्ट सेल्स डायरेक्टर के रिरियाहट पूर्ण निर्देश को सुनने के बाद भी उसके होठो की मुसकान वाली भगिमा मिटी नही। मेज पर से अपना सामान समेट कर उसने अपना थैला कन्धे पर लटकाया और एकाउंट विभाग मे जाने के लिए सीढियाँ चढने लगा।

बात यह थी कि अधिशासी अभियन्ता को अँग्रेजी में क्या कहते हैं, यह याद करने के लिए जैसे ही कागजों पर फिसलती अपनी कलम को रोक उसने चेहरा ऊपर उठाया, बॉस को केबिन से निकलकर बाथरूम की ओर जाते देख लिया। अचानक, एकदम अचानक बाथरूम की नसें तोड़ती दुर्गन्ध, दीवारों पर वीभत्स तरीके से गुँथी पीली लकीरों का जाल और उसमें फँसे हुए बॉस की बदहवास सूरत उसके दिमाग में औचक तरीके से उतर आयी। इस समीकरण के दिमाग में तैरते ही उसका मुँह खुल गया और दीवारों को झिंझोड़ते, दफ्तर को चौंकाते और कर्मचारियों को हिलाते उसके उन्मुक्त ठहाके यकायक बिखरने फैलने लगे और चेहरे पर एक सुकून-भरा इत्मीनान आकर ठहर गया।

पाँच महीने की इस नौकरी के बाद के पूरे चार वर्ष उसने एक बड़े प्रेस में प्रूफरीडरी करके और अमेरिकन लायब्रेरी में अध्ययन करके बिताये। भूख, ठंड, गर्मी और कुंठाओं के त्रासदायी दर्द के साथ। इन चार वर्षों में उसने हिन्दी और दर्शन से प्राइवेट एम० ए० भी किये। ये काफी गरीबी के दिन थे और इन दिनों में कुमनाथ की जिन्दगी में उसका नजदीकी रिश्ता कायम हुआ था।

कहते हैं कि सन् निहत्तर के उत्तरार्ध में उसके एक लेखक मित्र ने जो सी० डी० ए० में ज्वॉइन्ट कन्ट्रोलर था, उसे सी० डी० ए० में एन० डी० सी० की पोस्ट पर लगवा दिया और वह मेरठ चला गया। लेकिन मेरठ जैसा नीरस, बेहूदा और बोझिल शहर बहुत समय तक उसे अपने भीतर नहीं समो सका और वह प्रोबेशन पीरियड के दौरान ही नौकरी छोड़ कर एक प्राइवेट पब्लिक स्कूल में हिन्दी अध्यापक बनकर लखनऊ चला गया। यहाँ भी वह ज्यादा दिनों तक एडजस्ट नहीं हो सका और हिन्दी को अपनी शर्तों पर जीने की विद्रोही सनक उसे कलकत्ता खींच कर ले गयी।

कलकत्ता! राजधानी व लाल किले पर लाल झंडा लहराने की तमन्ना रखने वाले नक्सलवादी क्रान्तिकारियों का केन्द्रीय स्थल।

तीन महीने बदहाली और बदहवासी में गुजारने के बाद आखिर वह कलकत्ते के एक प्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक में सहायक सं०

पर नियुक्त हो गया।

सुना जाता है कि कलकत्ते मे सगीता वैनर्जी नाम की किसी लडकी से उसका रोमास हो गया था और वहुत जल्द वे शादी भी करने वाले थे, पर यकायक किसी वात पर नाराज़ होकर या परेशान होकर सगीता वैनर्जी एक रोज विना वताये कलकत्ते से गायव हो गयी। वहुत खोजवीन के वाद पता चला कि सगीता वैनर्जी वम्वई चली गयी है। वम्वई का नाम सुनकर वह वहुत-वहुत भीतर तक दरकता चला गया और नौकरी छोडकर वापस दिल्ली चला आया—वेचैन, परेशान और पराजित। वह भावुक तो था, लेकिन वेवकूफी की हदो तक नही और अच्छी तरह जानता था कि विना पते के सगीता वैनर्जी को वम्वई मे तलाश करने के लिए एक पूरी उम्र भी कम है। सगीता वैनर्जी एक वेपहचान नाम था और वम्वई पहचान वाले नामो को भी अपने भीतर किसी रहस्य की तरह गुम कर लेती है—उसे यह मालूम था। इसी कारण वह चाहकर भी सगीता वैनर्जी के पीछे वम्वई नही जा सका।

उसकी जिन्दगी मे सगीता वैनर्जी के एकाएक चले जाने के भी कई किस्से सुने जाते है। लेकिन जो सर्वाधिक प्रमाणिक वात है और जिसे उसन अपने उपन्यास मे स्वीकारा भी है वह यही है कि शादी से पहले और सगीता के गायव हो जाने से ठीक दो रोज पहले उसने सगीता के साथ सभोग करना चाहा था। सगीता को कोई एतराज भी नही था, मगर एन वक्त पर, जब उत्तेजक स्थितियाँ अपने चरम पर थी, वह यक-व-यक बर्फ के टुकडे म तब्दील हो गया था और सगीता की आग जल-जल कर धुआँ होती गयी थी। सगीता तो चौंकी ही थी वह खुद भी कम आश्चर्यचकित नही था। एक औचक हादसा समझ कर दोनो ने इसे टालना चाहा था, मगर जब दूसरे रोज भी घटना की पुनरावृत्ति हो गयी तो सगीता का शक यकीन मे वदल गया और तीसरे रोज वह कलकत्ते मे नही पायी गयी।

उसकी तकलीफ भयानक थी।

उसने उम्र की अपरिपक्वता के गुजर जाने के वहुत वाद पूरी तरह स मैच्योर मानसिकता म किसी लडकी के साथ प्यार का रिश्ता कायम किया था, मगर अजाम इतने चौंकाने और आक्रात कर देने वाले तरीके से

सामने आया था कि उसकी नसें तडक गयी थी और दिमाग सुन्न हो गया था।

वह सगीता के विछोह और अपने पौरुष की पराजय की तकलीफ को एक साथ बरदाश्त करता हुआ कलकत्ते की सडको पर बेतरह थक गया। इतनी असीम थकान के साथ और इतनी यातनादायी यादो का बोझ सभाले, कलकत्ते म रहने का अर्थ था स्वय को जिबह करना। चन्द रोज बाद ही वह दिल्ली भाग आया।

इसके बाद शुरू हुए उसके खानाबदोश दिन। शहर-दर-शहर। तकलीफ दर तकलीफ। याद-दर-याद। सवाल दर-सवाल।

अनुभव !

अनुभव !!

अनुभव !

कलकत्ते की नौकरी छोडने के बाद वह कोई और नौकरी नही ही कर सका। फ्री लासिंग और किताबो की रॉयल्टी उसकी अकेली जिन्दगी को कठिन तरीके से ही सही मगर खिसकाती रही। सगीता बैनर्जी और स्वय की जिन्दगी पर लिखा गया उसका दूसरा उपन्यास यौन विकृतियो और कुठाओ से लबरेज था मगर एक ही वर्ष मे एक के बाद एक चार सस्करणो मे छपकर बिक्री के प्रतिमान तोड रहा था। उपन्यास की तारीफ और विरोध ने उसे खासा कन्ट्रोवर्शियल राइटर बना दिया था और यही वह चाहता भी था।

उसके बारे म सुनी गयी या फैलायी गयी सारी ही बातें ज्यो की त्यो सच नही है। कुछ सही हैं, कुछ कॉफी हाऊस से निकली हुई लफ्फाजियाँ हैं और कुछ ऐसी हैं जो अपने मूल रूप मे सही थी, मगर दूसरो तक पहुँचते-पहुँचते इतनी विकृत हो गयी हैं कि उनकी वास्तविकता कहाँ से प्रारभ होकर कहाँ समाप्त हो गयी है, बताना मुश्किल है। दो उपन्यासो और साढ़े तीन दर्जन विख्यात-कुख्यात कहानियो के चार सकलनो के अलावा उसकी व्यक्तिगत जिन्दगी क चौंकाहट भरे और विवादास्पद प्रसग ही उसकी अब तक की जिन्दगी की कुल पूँजी हैं और ।

खैर छोड़ो !

बात उसके चेहरे पर उतरते हुए सुस्त-से अँधेरे में गुम हुई थी जो उसे समय ने दिया है और जिसके बारे में तुम जानते हो कि वह एक शब्द भर नहीं है। यानी समय।

तुम्हारा नाम क्या है ?

उसका नाम भुवन है। भुवन किशोर। वह अपनी जिन्दगी के तीसवें साल और सत्ताइसवें शहर नैनीताल में है।

तुम किस शहर में रहते हो ?

वह किसी शहर में नहीं रहता।

वह हर शहर में रहता है।

नैनीताल पहुँचने के सातवें दिन की दोपहर तक तमाम उत्साह को मोह-भंग का सामना करना होगा और नैनीताल आने की एक पूरी-की-पूरी ललक इस तरह चकनाचूर हो जायेगी, उसने कल्पना भी नहीं की थी।

यह एक अचरज की बात थी। अचरज की और दुख की भी। उसे अपनी मानसिकता पर दुख भरा क्रोध आने लगा। कोई बात है भला ! पूरे नैनीताल के चेहरे पर एक तृप्त-सी उन्मुक्तता है, ताजगी है और खिल-खिलाहट है। एक साबुत उत्साह का सिलसिला चेहरा-दर-चेहरा बनता चला गया है और मिस्टर भुवन—भुवन किशोर हैं कि मनहूस हो उठे हैं। हाँ, मनहूसियत यहाँ के सन्दर्भ में एक उपयुक्त शब्द है।

लेकिन ऐसा हुआ क्यों है ?

'सध्या।' उसने सोचा।

उसकी उदासी के सूत्र कहीं सध्या से जाकर तो नहीं जुड़ते ? वह बेचैन हो गया।

सध्या हलद्वानी के सबसे बड़े टिम्बर मर्चेन्ट की इकलौती लड़की है और भुवन किशोर की पागल प्रशंसिका। भुवन की आधा दर्जन किताबें सध्या की बुकशैल्फ में एक अलग व्यक्तित्व बन कर उभरती हैं। उन्हें इसी तरह सजाया गया है कि देखने वाले की नजर उनके ऊपर पड़े। उसने सध्या की बुकशैल्फ का फोटोग्राफ देखा है।

उससे मिलने के लिए संध्या दो बार दिल्ली भी आ चुकी है। वह जहाँ कहीं भी रहा है, संध्या के पत्र उसे नियमित रूप से वहीं मिलते रहे है। तब भी जब वह कलकत्ता मे था और संगीता बैनर्जी से शादी करने की तैयारियों में लगा था। संध्या यह बात नहीं जानती थी कि संगीता बैनर्जी नाम की भी एक लड़की थी जो उसके भुवन को अपनाते-अपनाते छोड़ गयी।

हालांकि संध्या अपने प्रत्येक पत्र में एकाध ऐसा वाक्य या संकेत जरूर देती थी जिससे यह जाहिर होता था कि संध्या नाम की एक पाठिका भुवन नाम के एक लेखक की केवल रचनाओं में ही दिलचस्पी नहीं रखती, बल्कि भुवन जैसे अराजक व्यक्ति के बेतरतीब जीवन को तरतीब देने के लिए भी उत्सुक और व्यग्र है, लेकिन भुवन ने संध्या की इस व्यग्रता को कभी भी गंभीरता से नहीं लिया था। संध्या का महत्त्व उसके जीवन मे एक अच्छी दोस्त और सुरुचि-सम्पन्न पाठिका के बतौर ही रहा और वह उसी तरह पत्र भी संध्या को लिखा करता था।

संगीता बैनर्जी वाले कांड के बाद कलकत्ता की सड़कों पर उसके बौखलाये और घबराये हुए दिमाग ने पहली बार सोचा था कि उसे संध्या के पास जाना चाहिए, मगर यह सोचकर कि अपने पराजित पौरुष का क्षत-विक्षत शव वह कहाँ छोड़ेगा, उसने इरादा बदल दिया था। और इस तरह संध्या रावत, संगीता बैनर्जी का विकल्प बनते-बनते रह गयी थी।

अपने नैनीताल पहुँचने की सूचना उसने संध्या को भेज दी थी और जवाब में संध्या एक घंटे के लिए उसे नैनीताल के बस-अड्डे पर उसी दिन मिल गयी थी जिस दिन वह पहुँचा था।

'क्या उसकी उदासी का सूत्र सचमुच संध्या से जाकर जुड़ता है?' उसने सोचा और सिहर गया।

नहीं! अब की बार वह स्वयं को उस भावुकता तक क़तई नहीं पहुँचने देगा—जिस भावुकता पर पहुँच जाने के बाद संगीता बैनर्जी के छोड़कर चले जाने से ज़िन्दगी में आग लग जाती है और दिमाग तहस-नहस हो जाता है।

'नहीं!' उसने निर्णय किया और घड़ी देखी—सवा चार बजे थे। पाँच

और साढे पाँच के बीच सध्या को पहुँचना है। वह साढे छह बजे तक उसके साथ रहगी। इस एक घटे के अटूट सुख का स्वागत उसे खुशी के साथ करना चाहिए। मगर कैसे ? खुशी कोई आवरण तो नही है जिसे जरूरत पडने पर चढा लिया जाये। जब भीतर तक भारीपन और उदासी का जगल सॉय-सॉय कर रहा है तो खुशी किस दरार से आयेगी ?

तो ?

सध्या का स्वागत इसी मनहूसियत के साथ करना होगा। वह जानता है कि अगर इसने जबदस्ती खुश होने का प्रयत्न किया तो स्थिति हास्यास्पद हो जायेगी, क्योंकि उसकी खुशी खिसियाहट बनकर उभरेगी।

वह यहां कुछ लिखने के उद्देश्य से आया था लेकिन, इस मन स्थिति मे जीते रहकर लिखना तो क्या, पढना तक सभव नही है उसके लिए। नैनीताल आने के लिए उसने गलत मौसम का चुनाव किया है।

"गलत वक्त पर पहुँचे, भुवन-दा !" नैनीताल पहुँचते ही उसके लेखक दोस्त आशू ने एक वक्री मुसकान के साथ उसका स्वागत करते हुए कहा था, "अब तुम ऐसी तकलीफ झेलोगे जिस मैं हर सीजन झेलता हूँ। मगर मेरी बात और है। मैं इस तकलीफ की अनिवार्यता के कारण इससे निबटने क लिए तत्पर रहने की कोशिश करता हूँ, मगर तुम एकाएक इस तकलीफ के शिकजे मे फँस जाओगे, मुझे ऐसा लगता है। पहाडो की जो कल्पना आदमी के दिमाग मे होती है उसे हर सीजन मे नैनीताल निर्ममता से तोडता है। सीजन मे यह शहर उत्तराखड का उच्चवर्गीय वेश्यालय बन जाता है। तुम्हे जाडो मे आना चाहिए था। आजकल तुम यहाँ कुछ नही लिख सकोगे। और यहाँ के साहित्यकार ? कूटे ऐय्याशो को छोड दिया जाय तो साहित्य और पत्रकारिता की यहाँ की जवान पीढी या तो जेलो मे है या फरार। शहरो को जगलो मे तब्दील कर देने वाले सत्ताधीश जगलो को कटवा रहे है। जवान पीढी उनसे मोर्चा ले रही है। जिस तरह की तुम्हारी मानसिकता है उसका अनुरूप अब यह समूचा उत्तराखड ही नहीं रहा । तुम राजधानी से भागकर यहाँ पनाह लेने आये हो, लेकिन मुझे लगता है कि अन्तत तुम्हे राजधानी के कॉफी हाउस मे ही पनाह मिलेगी, भुवन-दा ! तुम यहाँ दो कारणो से नहीं टिक सकोगे। एक

तो सीजन का नरक तुम्हारे भीतर वितृष्णा पैदा करेगा दूसरे यहां लड़ाई शुरू हो चुकी है।

उसने आशू की चेतावनी को मार्क्सवादी फितूर समझ कर उड़ा दिया था नतीजतन वह फँस गया था। और चूंकि वह फँस चुका था इस लिए सध्या का स्वागत उल्लास और उन्मुक्तता के साथ नहीं कर सकता था। वह सध्या के आने पर अपनी तकलीफ से जूझ रहा होगा इसलिए सध्या के भावुक मन को उसकी आंखों मे पानी बनकर बहने से नहीं रोक सकेगा। वह रोयगी और वह सिगरेट पीता रहेगा। बस।

जो बातें कहनी हैं वो अनकही रह जायेगी और जो तब करना है उसका सूत्र खो जायेगा।

वह मिलेगी और बिन मिले सी स्थिति में वापस लौट जायगी। वह फिर अकेला रह जायेगा और यहां से भाग जाने की सोचेगा। भागने की तैयारी भी करेगा मगर भाग नहीं पायेगा। क्योंकि सध्या तीन या दो रोज बाद फिर आने का वादा करके जायेगी और आशू कहेगा घबरा गये न ?

सध्या फिर आयेगी और फिर चली जायेगी। वह बस या कार की खिड़की से झांक कर भावुक हो जायगी और वह एक क्यक भीतर से पूरी तरह रीत जायगा। रीत जायेगा और सिगरेट पीने लगेगा। वह फिर सिगरेट न पीने को कहेगी और वह भी फिर से यह वादा करेगा कि अगली मुलाकात तक सिगरेट छूट चुकी होगी। वह चलते हुए रूमाल हिलायगी और उसे लगेगा कि संगीता बैनर्जी बम्बई जा रही है।

संगीता संगीता संगीता ! उसने अपना सिर झटक लिया। क्या यह जरूरी है कि दुनिया की हर लड़की का प्रेम संगीता वाले सीमान्त पर जाकर चुक जाता हो ? क्या वह अपने पराजित होने का रिस्क फिर एक बार ले ? उसने फिर एक बार अपना सिर झटका सिगरेट सुलगायी और होटल के कमरे से बाहर आ गया।

यह होटल आशू का है। कहना चाहिये कि आशू के परिवार का है। आशू के परिवार वालों के तीन होटल्स हैं यहां। विचारों से कट्टर मार्क्सवादी आशू नैनीताल से हिन्दी का साप्ताहिक अखबार निकलता है— नैनी

दर्पण'। पाँच हजार नियमित ग्राहकों और दो हजार फुटकर बिक्री वाला उत्तराखंड का सर्वाधिक लोकप्रिय अखबार। जगल के ठेकेदारों से लेकर प्रशासनिक ताकतों तक के लोग 'नैनी दर्पण' के दुश्मन हैं, मगर आशू भी कमजोर सपादक नही है। आशू जिस पार्टी को विलोंग करता है उसके योद्धा कॉलेजो, अदालतो किसान सभाओं, ट्रेड यूनियनों और प्राध्यापकों से लेकर बस ड्राइवरों और बैंक कर्मचारियों तक फैले हुए हैं। 'नैनी-दर्पण' का एक मतलब है। आशू बिष्ट एक 'पर्सनैलिटी है। 'पेपर टाइगर्स' को अपनी कलम की नोक के नीचे रखने वाले आशू से उसकी दोस्ती तब से है जब देहरादून के डी० ए० वी० कॉलेज म दोनों साथ पढ़ा करते थे और साहित्यकार बनने के सपने सग-सग देखा करते थे।

यह सन् उन्नीस सौ सड़सठ की बात है जब पश्चिम बगाल के नक्सलबाड़ी क्षेत्र में मजलूमो म हथियार उठाकर राजसत्ता के विरुद्ध जग का ऐलान किया था और उसके भुवन किशोर के पिता कांग्रेस कमेटी के जिला-अध्यक्ष निर्वाचित हुए थे।

नक्सलवाड़ी मे हथियार उठने पर आशू को उसके घरवालो न वापस नैनीताल बुलवा लिया था, होटल का कारोबार सभालन। और वह खुद साहित्य को समर्पित हो गया था। बाद के वर्षों मे इतना ही पता उसे आशू के बारे म चला कि मार्क्सवादी जुनून ने आशू को अपनी गिरफ्त मे पूरे तौर पर ले लिया है और आशू को यही पता चल पाया कि सगीता बैनर्जी के जुनून ने भुवन किशोर की जिन्दगी म तबाही लाकर उस खानाबदोश बना दिया है। दोनों न एक-दूसरे के प्रति अपने-अपने खतों म सवेदना प्रकट की थी और धीमे से बुदबुदाये थे—बेचारा।

साढे पाँच बजने म पन्द्रह मिनट बाकी थे। उसने 'नैनी-दर्पण के कार्यालय मे झाँक लेना उचित समझा और नीचे की सीढ़ियाँ उतर कर ऑफिस मे पहुँच गया। ऑफिस म करीब एक दर्जन चेहरे उसे अतिरिक्त नजर आये। वह ठिठक गया।

आओ आओ भुवन दा, तुम्हारा परिचय हो जाये," आशू अपनी कुर्सी से ही चिल्लाया और आफिस म मौजूद चेहरों की तरफ मुखातिब होकर बोला, 'माई फ्रेन्ड ए वैल नान हिन्दी राइटर भुवन किशोर

आजकल नैनीताल मे हैं।"

फिर आशू ने आफिस मे मौजूद चेहरो का परिचय देना शुरू किया "डी० सी० जोशी, डी० एस० बी० कालेज स्टूडैन्ट्स यूनियन के अध्यक्ष, मिस रेखा थपलियाल, उत्तराखड छात्र सघ की महासचिव मुकेश बडथ्वाल, पन्तनगर विश्वविद्यालय मजदूर यूनियन के ज्वाइन्ट सेक्रेटरी, भगवती प्रसाद डोभाल, कुमाऊ पत्रकार एसोसिएशन के सयोजक, के० के० तिवारी, डी० ए० वी० पी० जी० कॉलेज छात्र सघ देहरादून के महासचिव, और य मिस रजनी उनियाल, जनवादी कला-साहित्य मोर्चा, उत्तराखड की केन्द्रीय कमेटी की चीफ ।"

उसने सभी से हाथ मिलाये और' 'ग्लैड टू मीट यू' वाक्य का रिपीट किया। जनवादी कला-साहित्य मोर्चे की रजनी उनियाल से हाथ मिलाते हुए उसने महसूस किया कि लडकी होने के बावजूद उसके हाथो की कठोरता आदमी से अधिक है। एक क्षण के लिए उसने रजनी की तरफ आँख उठाकर देखा तो पाया कि वह बडे रहस्यमय अन्दाज मे उसे घूर रही है। उसने नजर घुमा ली और सिगरेट सुलगाने लगा।

राजी ने उसे दो समाचार दिये। एक यह कि हलद्वानी से सध्या का फोन आया था कि किसी जरूरी कारण से वह आज नही आ रही है। तीन रोज बाद सुबह सात बजे वह नैनीताल के बस-अड्डे पर मिलेगी। दूसरा समाचार यह कि नैनीताल क्लब जलने की आड मे सरकार ने जिन छात्र-नेताओ को गिरफ्तार किया है उनकी रिहाई के समर्थन मे, हलद्वानी मे एक विशाल जुलूस निकल रहा है और आशू का चूँकि यही रहना जरूरी है इसलिए वह चाहता है कि इस जुलूस के साथ-साथ रहकर समस्त कार्यवाही के फोटोग्राफ भुवन खीचे और फिर एक बढिया-सा रिर्पोताज 'नैनी-दर्पण' के लिए तैयार करे। आशू का विचार था कि भुवन को यह कार्य करना चाहिए ताकि वह सक्रिय हो सके और उसके दिमाग मे लगातार जमता जाता कुठाओ का जग उतर सके। साथ ही आशू की यह सलाह भी थी कि जब वह यहाँ लिखने के उद्देश्य से ही आया है तो 'चिपको मूवमेंट' को आधार बनाकर क्यो नही लिखता ?

इससे पहले कि आशू की सलाह पर वह कोई प्रतिक्रिया जाहिर कर

पाता, रजनी उनियाल तपाक से बोली, "बीच में बोलने के लिए मुआफी चाहती हूँ, मिस्टर भुवन ! मैंने आपको पढ़ा है और मेरा सवाल है कि मर्द और औरत के जिस्मानी ताल्लुकात के अलावा, क्या इतनी बड़ी दुनिया में और कुछ भी ऐसा नहीं रहा है जो लेखन और चिन्तन का विषय बन सके ? गरीबी, भुखमरी और बदहाली की शिकार इतनी बड़ी आबादी में भी आपको बेडरूम की नीली रोशनी में यौन तृप्ति के लिए तड़फड़ाती औरत ही नजर आती है या फिर नपुंसकता से आक्रान्त कोई मर्द कहाँ है वो लोग जो हर शहर में, हर गाँव में और हर मुहल्ले में सरकारी गोलियों से मारे जा रहे हैं आपकी चिन्ता है कि एक बदचलन अमीरज़ादी की हवस कैसे पूरी हो ? पुलिस के तहखानों में जिस औरत के ऊपर पन्द्रह सिपाही चढ़ रहे हैं या जिस औरत का स्तन जलती सिगरेट से गोदा जा रहा है वहाँ तक क्यों नहीं जाती आपकी नज़र ? यह मेरा सवाल है और आपका स्पष्टीकरण ?" रजनी उनियाल ने अपने आक्रोश का उपसंहार किया।

भुवन किशोर का दिमाग सनाका खा गया। यह लड़की नहीं, आग है। इसकी हथेली ही नहीं, जबान भी कठोर है। फिर भी, वह उत्तेजित नहीं हुआ। शान्ति से मुसकराता रहा। फिर आहिस्ता से बोला, "मेरा स्पष्टीकरण बस यही है कि मेरी जिन्दगी में अब तक जो लड़कियाँ आयीं उनमें रिवोल्यूशन की नहीं, सैक्स की आग थी अगर सबसे पहले आप मिली होतीं तो हो सकता था कि मैं किसी जेल में पड़ा होता ।"

"आप मज़ाक के मूड में है।" रजनी खिलखिलाकर हँस पड़ी।

भुवन किशोर सबसे पहले तो उसके 'मुआफी' कहने के ढंग पर फिदा हुआ था और अब उसके हँसने के ढंग पर मर गया। साथ देने के लिए उसने एक ठहाका लगाया और फिर अचानक बोला, "टोटल चेंज मिस रजनी अगली बार जब मुझे पढ़ेंगी तो टोटल चेंज मिलेगा।"

"आमीन !" रजनी ने जोर से कहा और फिर एक सम्मिलित ठहाका ऑफिस में चकराया-चकराया फिरने लगा।

"तो फिर ?" आशू ने अचानक पूछा।

"तो फिर क्या ?" भुवन ने तत्परता से जवाब दिया, "रजनी जी का

भाषण सुनने के बाद भी कोई तुम्हारे आन्दोलन से कट सकता है क्या ?"

"मेरे नहीं, जनता के आन्दोलन में।" आशू बोल पड़ा।

"ओ० के०, ओ० के०।" भुवन मुसकराया और ठहाके एक बार फिर उछल पड़े।

इतने में ही चाय आ गयी और भुवन बाकी लोगों से बातें करने लगा। जब वह हलद्वानी वाले जुलूस की सारी जानकारी ले चुका तो सबसे विदा लेकर ऑफिस से बाहर निकल आया। बाहर आने के बाद वह फिर मुड़कर ऑफिस में गया और आशू से बोला "मूवमेंट से सम्बन्धित सारी सामग्री कमरे में रखवा देना। रात को स्टडी करने का इरादा है।"

इसके बाद वह सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गया और झील की तरफ चल पड़ा। उसने महसूस किया कि उसके आन्दोलन में शिरकत करने की स्वीकृति से आशू का चेहरा एक इत्मीनान-भरे सुकून से दिप दिप करने लगा था।

इंगलिश लिटरेचर से एम० ए० करने वाली सुपरिन्टेंडेंट पुलिस की दबंग और शोख लड़की जया चौधरी ने नाश्ते की मेज पर अपने पिता मिस्टर शमशेर चौधरी से सवाल किया, "आपने नक्सलवादियों को देखा है ? कैसे होते हैं वे ?"

मिस्टर चौधरी के गले में ब्रेड का पीस अटक गया। उनकी आँखें पहले तो भौचक रह गयी, फिर उनमें हलकी-सी उदासी कौंधी और अन्ततः पुलिसिया मुद्रा में तब्दील हो गयी।

"गुंडे और डकैत होते हैं।" एस० पी० चौधरी ने बिना बेटी की तरफ देखे जवाब दिया और कॉफी सिप करने लगे।

"लेकिन मुझे लगता है कि यह सरकारी प्रचार है। गुंडों से कोई भी सरकार इतना परेशान नहीं होती," जया ने पिता के चेहरे को घूरते हुए कहा, "डकैतों और नक्सलियों में कोई तो फर्क जरूर है। आखिर वे इस मुल्क से खत्म क्यों नहीं होते ? इतनी बड़ी राज्य-शक्ति उन्हें पूरे तौर पर कुचल क्यों नहीं पाती ?"

' उन्ह कुचला जा चुका है।" मिस्टर चौधरी का चेहरा सख्त हो आया। लेकिन उनके सख्त हुए चेहरे के पीछे काँपते घनीभूत अँधेरे को जया न पकड लिया। उसने कुछ तेज आवाज मे पूछा, "आज का अखबार देखा है आपने ?"

देखा है, क्यो ? '

"क्योकि पहाड के एक सर्वोदयी लीडर ने दिल्ली जाकर बयान दिया है कि 'चिपको' म तेजी के साथ नक्सलवादी घुस-पैठ आरभ हो गयी है और अगर सरकार न कडा रुख न अपनाया तो परिणाम खतरनाक होंगे।"

"तुम राजनीति मे दिलचस्पी क्यो लेने लगी हो ?" मिस्टर चौधरी एकाएक झल्ला पडे।

"क्योकि अँग्रेजी के बाद अब मै पोलिटिकल साइस से एम० ए० कर रही हूँ।" जया ने शरारत के साथ कहा।

"तो करो भई ! लेकिन एम० ए० करने के लिए नक्सलियो की खोज-बीन की जरूरत क्यों पड रही है ? ' मिस्टर चौधरी ने उसी मुद्रा मे कहा और कॉफी का अन्तिम सिप लेने के बाद नेपकिन से मुँह-हाथ साफ करने लगे।

दरअसल, उनकी झल्लाहट का कारण जया के सवाल नही, 'चिपको' मे नक्सली घुसपैठ ही था। जो न्यूज आज के अखबारों मे छपी है वह उन्ह कल रात ही पता चल गयी थी। दिल्ली से उनके अतीत का गुणगान करते हुए *आज की न्यूज के सन्दर्भ मे, उन्ह झाड पडी थी कि क्या वे सो रहे हैं ?* इस झाड से एक बार तो उनका मूड ही खराब हो गया था। 'चिपको' के सन्दर्भ म उन्हें अभी तक न तो सर्वोदयी नेताओ का रुख समझ मे आया था और न ही सरकार का। इतना तो उन्ह मालूम चल गया था कि सर्वोदयी नेताओं को सरकारी सरक्षण प्राप्त है, लेकिन यह उन्ह अभी भी पता नही चला था कि सरकारी सरक्षण-प्राप्त सर्वोदयी लीडरशिप के शाकाहारी मूवमेंट 'चिपको' मे तेज़ी के साथ प्रवेश करते जा रहे अलग-अलग इलाकों के हिंसावादी जन-नेताओं के बारे मे स्पष्ट निर्देश क्या हैं, और इसी कारण वे 'निर्मम दमन' की नीति पर चलने से हिचकिचा रहे थे। रात को झाड

स उन्ह क्रोध तो आया था लेकिन यह भी स्पष्ट हो गया था कि इस बार दमन का स्वरूप कतई भिन्न होगा। उन्ह हिंसक तत्वों को जनता से अलग थलग करना होगा और सर्वोदयी लीडरशिप म चल रहे मूवमेंट को नजर अदाज करते हुए हिंसक नतृत्व के मूवमेंट का दवाना होगा। यह काम आसान नही था क्योंकि इस बार लाग नक्सलवाडी की तरह घोषित प्रचारित और खून हुए नही थे। इस बार उनक पास केवल बन्दूकें नही थी आदमी थ और दिमाग थे। इन लागो का इरादा और हौसला कैसा होता है यह मिस्टर चौधरी पहले स ही जानते थे। इस हौसले को कुचलन के लिए कितना बडा हौसला अपने भीतर जुटाना पडता है यह याद करते ही उनकी आखें सिकुड गयी और चेहरा एक सुस्त थकान म डूब गया। स्वय को अतीत के मुहाने पर पहुँचन स व रोक नही सके। नक्सलवादी शब्द ही एसा था।

नक्सलवादी नवेन्दु घोष!

आखिर मिस्टर चौधरी इस शब्द और शब्द के पीछे छुपे अथ को भूल कसे सकत हैं? अपनी अब तक की जिन्दगी मे मिस्टर चौधरी ने बडे बड शब्दा का तोड कर फेंक दिया था। कातिल डकैत स्मगलर और नेता य तमाम बड-बड शब्द उन्हान इस तरह तोड दिय थे कि वे बदशक्ल और बरीढ हो गय थे। डकत-दुनिया म मिस्टर चौधरी का आतक चट्टान की तरह सख्त और शाश्वत था। उनकी शक्ल दख भर लेने स अपराधी सच कबूल कर लेत थ। कातिला और डकैता के साथ हवालात म लडी जाने वाली जवान खुलवाने की लडाई म व हमेशा विजता साबित हुए थे। लकिन लेकिन व नवेन्दु घोष को कस भूल सकत है जिसे यातना चक्र म पीसत पीसते उन्होंने अतत समाप्त कर दिया था मगर उसकी जबान पर पड़ ताले का नही तोड पाय थ।

नवेन्दु घोष। कलकत्ता का फरार नक्सली जिसके ऊपर पाँच हजार का ईनाम था और जिससे भूमिगत नक्सली नेता सीताशु वैनर्जी का पता उगलवाने का काम सरकार ने एस० पी० चौधरी को सौंपा था। लेकिन व एस० पी० चौधरी पहली बार अपने इस मुहिम म नाकामयाब हो गय थ। एक अदना स छोकरे न अजय एस० पी० चौधरी को पराजित कर दिया

था। व हार गये थे और हारने के तुरन्त बाद वे नक्सलवादी शब्द के पीछे छुपे हुए फौलादी अर्थ से रोमांचित हो उठे थे। और रोमांचित होते ही वे अनायास और अनजाने ही नवेन्दु घोष के प्रति श्रद्धानत हो गये थे।

नवेन्दु के मरते ही मिस्टर चौधरी को एकाएक लगा था कि उनके भीतर नवेन्दु के प्रति एक विचित्र-सी मोहग्रस्त भावना ने जन्म ले लिया है। अचानक, एकदम अचानक, उन्हें कांग्रेस कमेटी के नगर-अध्यक्ष मिस्टर आर० के० शर्मा के प्रति अपने भीतर एक तीखी नफरत का अहसास हुआ था जिन्होंने पुलिस को फोन करके नवेन्दु घोष को अपने घर से पकड़वा दिया था। नवेन्दु आर० के० शर्मा के लड़के का दोस्त था और सुबह तीन बजे जब वह घर छोड़ रहा था, पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया था। मिस्टर शर्मा न नवेन्दु के ऊपर रखा पांच हजार का ईनाम कांग्रेस-कमेटी के कोष मे दान कर दिया था और आखिरता म विधान सभा मे प्रवेश कर गये थे। प्रधानमंत्री की कृपा-दृष्टि उन पर पहले से ही थी और इस घटना से उस कृपा-दृष्टि मे इजाफा ही हुआ था। नवेन्दु की मौत हालांकि स्वयं मिस्टर चौधरी के हाथों हुई थी, मगर उन्हें लगा था कि उसकी मौत के ज्यादा बड़े जिम्मेदार मिस्टर शर्मा ही है और मिस्टर चौधरी अपनी तमाम कर्तव्य-निष्ठा के बावजूद मिस्टर शर्मा के प्रति गहरी नफरत से भर उठे थे। यही कारण था कि मिस्टर शर्मा के एम० एल० ए० बनते ही एक रात जब एक नक्सली द्वारा उनका निर्मम कत्ल कर दिया गया तो मिस्टर चौधरी को अपनी जिन्दगी की चिन्ता के साथ-साथ मिस्टर शर्मा के कत्ल से कहीं थोड़ा-सा सुकून भी मिला था।

यक-ब-यक लगा चौधरी को लगा कि उसके पिता कुछ ज्यादा ही ध्यान-मग्न हो गये है, जबकि उसका सवाल अभी तक भी अनुत्तरित ही है। उसने अपना अन्तिम हथियार इस्तेमाल किया और पिता के गले मे बांह डालकर लाड से पूछा, "आपने बताया नहीं? नक्सलवादियों को देखा है आपने?"

मिस्टर चौधरी चौंक पड़े। जिस गैर-सरकारी मनःस्थिति मे वे इस समय गुजर रहे थे उसमें एस० पी० चौधरी वाले क्रोध की जगह नहीं थी। इस कारण अपनी दुलारी बेटी की शंकाओं का समाधान करने मे उन्हें

कोई नुकसान नहीं दिखायी दिया।

"हाँ, देखा है," उन्होंने धीरे से कहा 'उसका नाम नवेन्दु था। नवेन्दु घोष। यह सन् उनहत्तर की बात है जब हम इस शहर में नहीं थे। तुम्हें अपने उस बी० ए० वाले क्लास-फैलो की याद है जिसके पिता मिस्टर आर० के० शर्मा थे जो बाद में एम० एल० ए० बन गये थे ?"

'एम० एल० ए० बनते ही जिनका खून हो गया था ?" जया ने याद किया।

"हाँ," मिस्टर चौधरी ने कहा, "यह नवेन्दु घोष उन्हीं मिस्टर शर्मा के लड़के का दोस्त था।"

"टेकचन्द का दोस्त ?" जया चौंक गयी।

'टेकचन्द ?' मिस्टर चौधरी ने पूछा।

"हाँ, टेकचन्द उसका असली नाम है। भुवन किशोर नाम तो उसने तब रखा था जब उसने कुछ लिखना वगैरह आरंभ किया था।'

"खैर छोड़ो," मिस्टर चौधरी ने प्रसंग बदल दिया, "कलकत्ते का वह फरार नक्सली मेरे हाथ से मारा गया था।"

"मारा गया था?" जया हतप्रभ रह गयी। फिर वह कुर्सी पर बैठ गयी और उत्सुकता से बोली, 'यह लड़ाई कब हुई थी ? आपने कभी जिक्र तक नहीं किया ? यह लड़ाई कहाँ और किस प्रकार हुई थी?" जया का कौतूहल चरम पर पहुँच गया था।

'हवालात में।' मिस्टर चौधरी अचानक नर्वस हो गये।

"हवालात में ?" जया जैसे धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी। उसने तीखेपन के साथ कहा, "मतलब, आपने एक निहत्थे और बँधे हुए आदमी पर अपनी बहादुरी आजमायी ?"

'शटअप !" मिस्टर चौधरी सहसा ही उत्तेजित हो गये और गरज कर बोले, "डोंट डिस्टर्ब मी ऐंड गो।"

जया पैर पटकती हुई नाश्ते के कमरे से बाहर चली गयी और मिस्टर चौधरी एकाएक ही बेचैन हो गये। जया ने उनके मन के दुखते हुए अँधेरे कोने को छील दिया था। तकलीफ से उनका चेहरा विकृत हो गया।

उन्हें याद है, यातना के वे तरीके जो लगभग नहीं ही इस्तेमाल होने

है, उन्होंने नवेन्दु पर आजमाये थे मगर उसकी जबान इस तरह बन्द थी जैसे *अलीबाबा और चालीस चोर' वाली कहानी की गुफा* जो 'खुल जा सिमसिम' कहने से ही खुल सकती थी, जबकि मिस्टर चौधरी और-और सम्भावनों से उसे खुलवाने के लिए प्रयत्नशील थे। नवेन्दु की दोनों जाँघों में उन्होंने पतले-पतले तेज धार वाले दो चाकू निर्ममता के साथ भोंक दिये थे और उन चाकुओं को तीन रोज तक उसकी जाँघों में ही घुस रहने दिया था। जब जाँघें पक गयी थीं तो उन्होंने चाकुओं को मथनी की तरह हिलाया था, मगर नवेन्दु का चेहरा विकृत-भर हुआ था, आँखें एक तीखी नफरत से भर गयी थीं। मिस्टर चौधरी को लगा था कि उनकी स्थिति कासिम जैसी है जो अभेद्य गुफा में बन्द है और गुफा के दरवाजे को खुलवाने के लिए 'खुल जा सिमसिम' के बजाय खुल जा आलू, खुल जा टमाटर, खुल जा सिमरैला और खुल जा अम्ब्रैला' जैसे हास्यास्पद जुमलों को दोहराता हुआ सिर पटक रहा है। वे क्रोध से बौखला गये थे। उन्होंने नवेन्दु का एक-एक नाखून उखाड़ लिया था, उसकी फ्रेंच-कट दाढ़ी को ठोडी के मास सहित नोच डाला था। उसकी छाती चेहरे और पीठ पर गर्म सलाखें चिपकायी थीं और अन्त में उसके गुप्तांग को जलती हुई मोमबत्ती की लौ पर रख दिया था। नवेन्दु चीखा था और उन्हें लगा था कि शायद अबकी बार गुफा खुल ही जाये, मगर नवेन्दु ने तड़प कर कहा था, "यह जुल्म बहुत कम है जब इन जुल्मों का बदला लिया जायेगा मिस्टर चौधरी, तो उस क्रांतिकारी प्रतिहिंसा की दहशत-भर से तुम जैसे कुत्तों का दिल फट जायेगा।'

सुपरिन्टेंडेंट पुलिस मिस्टर शमशेर चौधरी का गुस्सा अन्धा हो गया था और उन्होंने नवेन्दु के सिर के लम्बे बालों को अपने मजबूत फौलादी सीधे हाथ (जिस सीधे हाथ पर सिर्फ उन्हें ही नहीं, सरकार बहादुर को भी गर्व था) से पकड़कर उसका सिर हवालात की चट्टानी दीवार पर पागलों की तरह टकराना प्रारंभ कर दिया था। एक दो तीन चार और पाँचवीं चोट में चटाख, कड़ाक की कर्कश आवाज के साथ नवेन्दु का सिर बीच से फट गया था और उसका भेजा बाहर निकल आया था। *नवेन्दु के बीचोबीच फटे हुए सिर से फव्वारे की शक्ल में उछलते गिरते*

सुर्ख खून मे भीगते हुए मिस्टर चौधरी अवाक रह गये थे। मरते हुए नवेन्दु की आँखो मे एक खतरनाक नफरत उतर आयी थी।

मिस्टर चौधरी आज तक उन आँखो को भुला नही सके हैं। उन आँखों की नफरत बरदाश्त न कर पाने के कारण मिस्टर चौधरी बहुत दिनों तक रात मे चौंक-चौंक कर जागते रहे थे। उन्हे लगा था कि अब वे एक अजीब-से अफसोसनाक हादसे की तकलीफदेह याद मे आक्रांत रहेंगे। नवेन्दु के मरते ही मिस्टर चौधरी को लगा था कि उनके चेहरे की लालिमा स्याह पड़ने लगी है और आक्रोश तथा कर्तव्यनिष्ठा की समूची भावना गल-गल कर बह रही है। अकस्मात और अनायास ही उनका पूरा बदन एक [illegible] थकान से शिथिल पड़ गया और चेहरे पर एक नीली-नीली-सी आग [illegible] आयी। आदर्शवादी शब्दो मे इस नीली आग को पश्चाताप की [illegible] कहा जा सकता है। मगर इतना तय है कि इस नीली आग ने मिस्टर [illegible] की रातें छीन ली थी। तब, वे अपनी जिन्दगी मे पहली बार [illegible] तरीके से पराजित हुए थे।

तब से हमेशा के लिए, इस अफसोसनाक [illegible] नवेन्दु घोष के प्रति उनके दिल मे एक अजीब और [illegible] ईर्ष्यालु प्यार थिरकने लगा है। इस ईर्ष्यालु [illegible] मन का एक हिस्सा सुनसान रेगिस्तान मे [illegible] इस सुनसान रेगिस्तान वाले हिस्से मे [illegible] करती भटकने लगती है। उनकी [illegible] सीने मे दबाये मर जाने वाले नवेन्दु [illegible] हिस्सा बेपनाह प्यार करता है [illegible] व्यक्ति को प्यार और नफरत [illegible] नही समझ सकता। जया [illegible] परिचित होती तो उनके [illegible] जया, । जया चौधरी [illegible] इकलौती लड़की [illegible]

अचानक, [illegible] चौधरी की चेतना [illegible]

ताछ करने की आवश्यकता उनकी बेटी को क्यो पड गयी ? नक्सलवाद यानी अपराध, और वह भी एस० पी० चौधरी के घर मे ? जिस व्यक्ति की जिन्दगी के बीस कठोर साल अपराधो को नेस्तनाबूद करते रहने मे गुजर गय, आज अपराध के सूत्र क्या उसके अपने घर म पनप रहे हैं ?

असभव। उन्होंने सोचा और परेशान हो गय। अगर नक्सलियो के प्रति उत्सुक होकर जया चौधरी अपराध कर रही है तो नवेन्दु घोष के प्रति आज भी मोहग्रस्त बने रहकर क्या मिस्टर चौधरी जया से भी बडा अपराध नही कर रहे है ? नही। मिस्टर चौधरी ने एस० पी० चौधरी के सामने तर्क पश किया, पहल यह तय होना चाहिए कि क्या नवेन्दु घोष वास्तव मे एक अपराधी था और नवेन्दु को मारकर एस० पी० चौधरी न क्या सचमुच एक बडे अपराधी का फन कुचला था ?'

बेशक, नवेन्दु एक खतरनाक मुजरिम था।' एस० पी० चौधरी न जवाब दिया।

'और उसका जुम ?' मिस्टर चौधरी ने सवाल फेंका, 'नवेन्दु घोष अपनी पार्टी के अध्यक्ष सीताशु बैनर्जी का पता नही बता रहा था, यह सच हैं और उसन बताया भी नही, लेकिन सवाल यह है कि सीताशु बैनर्जी का पता सरकार को क्यो चाहिए था ? उसे कत्ल करने के लिए ही न ? मगर क्या ? सीताशु बैनर्जी, नवेन्दु घोष और उनके अन्य साथियो का सफाया करान की जरूरत क्या सरकार को इसलिए नही पड गयी थी कि उन्होंन जालिम हुक्मरानो, सूदखोरो, अत्याचारी जमीदारो और तिजोरियो के साँपो को कुचलना शुरु कर दिया था ? एस० पी० चौधरी, तुम बताओ कि अगर जुल्म के विरुद्ध हथियार उठा लेना अपराध है तो जुल्म करना और जुल्म को सरक्षण देना क्या है ? अत्याचार का विरोध करना अगर अन्याय है ता अत्याचार करना क्या है ? क्या यह सच है एस० पी० चौधरी, कि तुम्हे तनखाह देने वाली सरकार अत्याचारी है, जैसा कि नवेन्दु कहा करता था ? और अगर नवन्दु सच कहता था तो सच की सजा मौत क्यो ?' मिस्टर चौधरी हाँफने लग।

'शट अप !' एस० पी० चौधरी का दिमाग भन्ना गया। 'खुद को सभालो मिस्टर चौधरी, तुम्हारे शब्दो मे बगावत चू रही है।'

'ओह !' मिस्टर चौधरी को एकाएक होश आ गया। उन्हें लगा कि अब तक वे एक दु:स्वप्न से गुजर रहे थे। उन्होंने जल्दी से पाइप सुलगाया और गहरा कश खींच कर अपना सिर कुर्सी की पुश्त में टिका लिया। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपना सिर झटका और मेज पर पड़ा अखबार उठा कर उसमें डूब गये। यह उनकी रोज की आदतों में शुमार था। नाश्ते से पहले एक नज़र अखबार के शीर्षकों पर, फिर नाश्ता, फिर अखबार और अन्त में ऑफिस।

पिता की फटकार से तन्नायी हुई जया कुछ देर बाद ही नॉर्मल हो गयी थी। उसने अपने रीडिंग-रूम की सभी अल्मारियाँ छान मारी थीं, मगर वहाँ ऐसी कोई किताब नहीं थी जो उसे नक्सलियों का परिचय दे पाती। नक्सलवादियों के प्रति उसकी उत्सुकता का कारण था, कल शाम अटैण्ड की गयी सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं की एक सार्वजनिक सभा में 'नक्सली' शब्द का इतना अधिक आतंक क्रिएट किया गया था कि जया हैरत में पड़ गयी थी। उसकी समझ में नहीं आया था कि कांग्रेसी, जनसंघी, सोशलिस्ट, सर्वोदयी और कम्युनिस्ट के बाद राजनीति के रंगमंच पर यह 'नक्सली' नाम की कौन-सी जाति चढ़ आयी है जिससे सर्वोदयी लोग इतने अधिक आतंकित और बेचैन हैं?

सर्वोदय वालों के दस कार्यकर्त्ता कई रोज से टिहरी की जेल में बन्द पड़े थे और उनकी रिहाई के समर्थन में ही यह जन-सभा आयोजित की गयी थी। सर्वोदय के एक स्थानीय नेता ने क्रोध से बौखलाते हुए कहा था, "जो लोग हिंसा में यकीन रखते हैं, जो चीन के एजेन्ट है और देश के दुश्मन है उनके साथ सरकार नर्म रवैया अपना रही है। तीन रोज पहले, हिंसा में यकीन रखने वाला एक चीनी एजेन्ट टिहरी में गिरफ्तार किया गया था जिसे अगले रोज छोड़ दिया गया...जबकि हमारे शान्तिपूर्ण भाई पन्द्रह रोज से जेल में बन्द हैं...हम इस नीति का अहिंसक विरोध करेंगे।"

इस भाषण के बाद उन्होंने समवेत स्वर में नारे लगाये थे—'माओवाद हो बरबाद...! नक्सलवाद मुर्दाबाद !!'

इस सभा से लौटने के बाद ही से 'नक्सलवादी' शब्द जया की चेतना पर ठकाठक बज रहा था। माओत्से तुंग के विषय में तो वह जानती

और चीन तथा चीनी क्रान्ति के विषय में भी उसने थोड़ा-बहुत पढ़ा था लेकिन गड़बड़ी देश के दुश्मन, माओवादी, हिंसक तत्व और नक्सली जैसे शब्दों में थी जो उसकी समझ से इस तरह फिसल रहे थे जैसे किसी नर्सरी के बच्चे के सामने हल करने के लिए त्रिकोणमिति का सवाल रख दिया गया हो। यह वह अच्छी तरह जानती थी कि अपनी आदत से मजबूर वह उस समय तक बेचैन रहेगी जब तक इस शब्द के तमाम अर्थ और समीकरण उसे मालूम न चल जायें। उसकी बेचैनी के बढ़ जाने का नया कारण यह था कि उसके पापा कहते थे कि उन्होंने एक नक्सली को जान से मार दिया था और ताज्जुब की बात यह थी कि मरने वाला नक्सली जया के बी० ए० के दिनों के सहपाठी भुवन का दोस्त था और भुवन के पिता का हत्यारा भी एक नक्सली ही था। उसे लगा कि वह बाबू देवकीनंदन खत्री के किसी तिलिस्मी उपन्यास के मायावी लोक में घूम रही है, मगर तिलिस्मी संसार से एक दम अपरिचित चौंकी हुई और बदहवास।

अचानक उसे लगा कि पापा यदि चाहें तो उसे ऐसे सूत्र दे सकते हैं जिनके सहारे वह आगे बढ़ सकती है। वह फिर नाश्ते वाले कमरे में आ गयी जहाँ मिस्टर चौधरी अखबार पढ़ रहे थे।

"वन क्वेश्चन, पापा!" जया बोल पड़ी।

"नो क्वेश्चन।"

"ओनली वन, पापा प्लीज़!"

"अच्छा, पूछो।"

"टिहरी जेल में बन्द एक नक्सली को अगले दिन क्यों रिहा कर दिया गया था?"

"उसके लिए डी० एम० के स्पेशल ऑर्डर थे।" मिस्टर चौधरी ने जवाब तो दे दिया, पर वे शंकित हो गये।

"क्यों?"

"सुनो," मिस्टर चौधरी ने अचानक ही कहा, "मुझे लगता है कि तुम मेरी मुहब्बत का नाजायज़ फायदा उठा रही हो।"

"मुहब्बत और बेरुखी का फैसला आज मत करिये, पापा। प्लीज़, मुझे इस सवाल का जवाब दे दीजिये, फिर मैं इस विषय पर कोई बात कभी

नही करेंगी, यह प्रॉमिस है। मुझे बताइये कि डी० एम० ने स्पेशल ऑर्डर क्यों थे? क्या वह डी० एम० का रिलेटिव था?"

"नहीं," चौधरी साहब पराजित स्वर मे बोले, "उसका मास बेस बहुत स्ट्रांग है। उसकी गिरफ्तारी से जबरदस्त तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी और उसे न छोड़ने पर भी कोई हिंसक और खतरनाक वारदात घट सकती थी।"

"पर पापा !"

"यू कैन गो।" मिस्टर चौधरी ने जया को डपट दिया और अपनी कैप उठा कर बाहर निकल गये। जीप वे स्वयं ड्राइव किया करते थे।

'मुहब्बत की दुहाई मत दो, पापा !' जया बड़बड़ायी। कड़वाहट से उसका चेहरा बिगड़ गया। अगर इस घर में मुझे मुहब्बत मिली होती तो मुझे भी आन्दोलनों, गोष्ठियों और बहसों में दिलचस्पी लेने का शौक नही था, जया ने सोचा। इतने बड़े सूने घर में कोई भी क्या करेगा, पापा? अगर सन्तान के लिए खाना और कपड़ा उपलब्ध करा देना ही मुहब्बत है तो मैं इस मुहब्बत से बेहद दुखी हूँ बेहद। उसने दाँत भीच कर सोचा और अपने स्टडी रूम में आकर एक ईज़ी चेयर पर गिर पड़ी।

अभी तमाम-तमाम सवाल अनुत्तरित ही थे और उसके दिमाग मे एक तीखा कोलाहल पैदा कर रहे थे।

अगर नक्सलवादी डकैत होते है तो किसी डकैत का इतना स्ट्रांग मास बेस कैसे हो सकता है कि उसकी रिहाई के लिए डी० एम० को स्पेशल ऑर्डर जारी करना पड़े?

मास बेस जनता के हकों के लिए लड़ने वाले जन-नेताओं का होता है और अगर नक्सली लोग देश के दुश्मन तथा चीनी एजेन्ट है तो हिन्दुस्तानी जनता के आन्दोलनों मे वे क्यों नेता बन रहे है और जनता उनकी इतनी कट्टर भक्त क्यों है कि एक नक्सली की गिरफ्तारी से पूरा पहाड़ हिला दे?

पापा बता रहे थे कि उन्होंने एक नक्सली को जान से मार डाला था। पुलिस वाले किसी निहत्थे आदमी का खून कर दें तो उन पर दफा तीन सौ दो का मुकदमा क्यों नही चलता?

क्यो क्यो आखिर क्यो ? जया चौधरी का दिमाग लहूलुहान हो रहा था।

चमकते हुए हलके नीले रग की 'थ्री जीरो फोर सिक्स' मर्सडीज़ जिस वक्त नैनीताल के बस-अड्डे पर पहुँची उस वक्त भुवन झील के सामने वाली रेलिंग मे टिककर सिगरेट पी रहा था और पूरे नैनीताल में हलका हलका कोहरा उड रहा था।

पहली बार भुवन का मौसम पसन्द आया था। इस वक्त तक नैनीताल घूमने आये ऐय्याश धन-कुबेरो का झुरमुट सडकों पर नहीं निकला था, इसलिए हवा भी साफ थी और सडक भी शान्त थी।

यह सुबह के तकरीबन सात बजे का वक्त था जब सध्या कार से बाहर उतरी और मुसकरायी।

मैं वक्त पर पहुँची, देखा ! सध्या ने नज़दीक आते ही उसके चेहरे पर चुम्बन जड दिया।

वह इस हमले के लिए तैयार नहीं था। न मानसिक रूप स और न ही शारीरिक रूप स। क्षणाश के लिए वह लडखडा गया और सिटपिटा कर इधर-उधर ताकने लगा।

आस पास ज्यादा लोग नही थे। जो थे उनका ध्यान इस घटना पर नही गया। अगर जाता भी तो उनके लिए यह सामान्य-सी बात होती, घटना नहीं।

आज पापा मुरादाबाद गये है, रात तक लौटेंगे, मैं शाम तक फ्री हूँ।' सध्या मुसकरायी।

वह सध्या की इतनी खुली और निमत्रण देती मुसकान देखकर बौखला गया। उसे लगा पूरी रात सिगरेटें फूँक कर उसने जो कठोर निर्णय लिया है वह दरअसल इतना कमज़ोर था कि भरभरा कर ढहने ही वाला है। लेकिन अधिक देर करना भी मुनासिब नहीं है। भावुकता सजीदगी के लौह कवच म प्रवेश करे, इससे पहले ही उसकी गरदन तोड देनी जरूरी है। बाद में एक सूना जगल आदमी को मिले, यह भी तो गलत है। न सिर्फ

गलत है बल्कि अत्याचार है, उसने सोचा।

"खुश नहीं हुए?" सध्या एकाएक ही जिद्दी बच्ची की तरह मचल गयी। शायद वह अपने साथ पूरा खुलापन लायी थी और पूरी ताजगी।

"इसमे खुश होने जैसी क्या बात है?" उसके मुँह से अचानक निकल गया। हालाँकि वह कहना यह चाहता था कि खुश होने का फायदा क्या है?

"क्यो?" सध्या परेशान हो गयी।

"क्योकि यह लम्बा वक्त तुम तब निकाल सकी हो जब तुम्हारे पापा बाहर हैं।" उसने कहा जबकि वह कहना चाहता था कि इस खुशी के सहारे कितने दिन खुद को छला जा सकता है?

उसे महसूस हुआ कि जो कुछ वह कहना चाहता है वह फिर अनकहा रह जायेगा। लेकिन सवाल यह था कि बिना कहे, सम्बन्धो का यह छद्म कितने दिन और जिया जायेगा? सम्बन्धो के इस छद्म को चकनाचूर किये बिना वह अपने पाँव दूसरी दिशा मे भी तो नही मोड सकता। दुविधा-ग्रस्त रहकर तो दूसरा कार्य भी ढग और मन से नही किया जा सकेगा। तो फिर? वह परेशान-सा होने लगा।

'तुम मेरी मजबूरी नही समझ पाते बस इसी बात का दुख है।" सध्या एक पल के लिए गहरी उदासी मे डूब गयी। उदासी के उसी गुहा-धकार मे डूबे रहकर वह आहिस्ता से बोली "क्या मैं नही चाहती कि तमाम दिन और तमाम रात मैं सिर्फ तुम्हारे ही साथ रहूँ? मगर क्या यह सभव है? पापा को पता भर चल जाये तो ।'

'पापा पापा !" वह अचानक बिफर गया और तडप कर बोला, "एक न एक दिन तो पापा को बताना ही पडेगा। तब?" उसने उत्तेजित होकर 'तब' पर जोर दिया, लेकिन तुरन्त ही उसके भीतर ढेर सी बेचैनी और घबराहट दौडने लगी। उसके माथे पर पसीना छलछला आया। वह समझ नही सका कि इस वक्त उसकी जबान ने धोखा दिया या उसका दिमाग ही उसका रकीब बन रहा है?

पूरी बात के निर्मम निर्णय के बाद जिन वाक्यो को उसे बोलना था वे वाक्य और शब्द आश्चर्यजनक रूप से उसकी चेतना से अनुपस्थित हो गये थे। उसने स्वय को अचरज-भरी दयनीयता में पाया।

फैसला तो हो जायेगा, उसने सोचा, लेकिन अपनी तरह से होगा, वैसे नहीं जैसे उसने तय किया था। शब्द जिस तरह गायब हो-होकर अपने तरीके मे आ रहे थे उसमें फैसला विकृति की ओर जा रहा था।

"तुम उस दिन को करीब ले आओ, मैं पापा को छोड़कर तुम्हारे साथ न चली आऊँ तब कहना।" सध्या भावुकता के चरम पर जा चुकी थी। उसने सध्या की भावुकता को तौला तो परेशान हो गया। सध्या की भावुकता में सजीदगी थी।

"तुम इसी वक्त कह दो कि वह दिन आज का ही है, मैं अभी अपने घर टेलीफोन करती हूँ कि मैंने अपना साथी चुन लिया है और घर छोड़ रही हूँ। बोलो . क्या तुम इसी वक्त मुझसे शादी कर सकते हो ?" सध्या की साँसे भारी हो गयी और वह उसके बदन से पूरी तरह सट गयी।

शादी . ! एक हारा हुआ आदमी भुवन के भीतर सिसकने लगा। सगीता बैनर्जी का नाम चीखता हुआ उसके दिमाग से टकराया और दिल को चीरता हुआ बदन के पोर-पोर मे तेजधार चाकू की तरह घुस गया। यक-ब-यक। देर तक भुवन का बदन टूटे हुए पत्ते की तरह काँपता-लड़खड़ाता रहा और माथा बेइतहा बूँदों से भर गया। रोकते-रोकते भी उसकी साँस उखड़ गयी।

कमरे की नीली रोशनी मे, सिलवटों-भरे बिस्तर पर, सर से पाँव तक नगी, पाँव पटकती, हाथ फटकारती और रह-रहकर भुवन के बालो को नोचती-खसोटती सगीता बैनर्जी उसकी आँखों मे उतर आयी और वह थर्राकर सम्पूर्ण रूप से पराजित हो गया। नहीं, यह सभव नहीं है। अगर यह सभव होता तो कलकत्ते से सगीता बैनर्जी अचानक गायब न हो जाती —उसने सोचा।

उसका दिमाग जलने लगा था और आँखें पथरा गयी थीं। तनाव से उसका पूरा चेहरा ऐंठ गया था और टाँगें थरथराने लगी थीं।

"क्या हुआ ?" सध्या भौचक रह गयी।

"कुछ नहीं।" वह स्खलित हुए कमजोर आदमी की तरह हाँफने लगा। हलक मे फँसी हुई साँसों को पूरी तरह बाहर फेंक कर उसने आहिस्ता से कहा, "चलो, चाय पी लें।"

उसने पीठ मोड़ ली थी और झील के किनारे खड़ी वीरान नावों को एकटक ताकने लगा था।

'नहीं,' उसने सोचा, 'वह दिन कभी नहीं आ सकता जब वह पौरुष से सम्पन्न हुआ हाथ सध्या की पीठ पर फिरा कर कह सकेगा, चलो ! हम शादी कर लेते हैं।' उसने एक सिगरेट निकाली और होंठों मे दाब ली।

"फिर सिगरेट ?" सध्या ने सिगरेट छीन ली।

उसने मुड़कर देखा—सध्या की आँखों म आँसू चमक रहे थे। सारी बौद्धिक परिपक्वता के बावजूद अपने भीतर वह कहीं बेतरह भावुक हो गया। उसने देर तक सध्या की आँखों म देखा और धीरे से बोला, "क्या सचमुच मुझे बहुत प्यार करती हो ?"

सध्या की आँखों के दो मोटे आँसू उसके गाल पर ढुलक आये। उसने भुवन की छाती पर अपना सिर टिका कर प्यार से कहा "चलो, कोर्ट चलते है।"

उसकी साँसें फिर उखड़ने लगीं। इससे पहले कि उसका दिमागी सन्तुलन उसके नियन्त्रण से फिसल जाता, वह सयत हो गया और आहिस्ता से ही बोला, "पहले चाय पीते है।"

सध्या का चेहरा सुस्त पड़ गया। वह सुस्त कदमों से ही मल्लीताल की तरफ चल पड़ी। भुवन पीछे पीछे था।

"सुनो।" उसने अचानक कहा।

"क्या ?" सध्या पलट गयी।

"चलो, कोर्ट चलते हैं" उसने नींद में डूबे आदमी की तरह बड़बड़ा-कर कहा, "पर याद रखना, मैं ।" उसकी जबान लड़खड़ा गयी।

"क्या याद रखना है ?" सध्या उत्सुक हो उठी।

"नहीं, याद नहीं रखना है," उसने कुछ याद करते हुए कहा, "याद नहीं रखना है बल्कि भूल जाना है। भूल जाना है कि शादी की पहली रात और जिन्दगी की बाकी रातों मे प्रेम के सम्बन्ध देह तक पहुँचेंगे।"

"मैं समझी नहीं।" सध्या हतप्रभ रह गयी।

"समझो सध्या डार्लिंग, समझो कि जब प्रेम से गुजरते हुए तुम शरीर तक पहुँचोगी तो तुम्हें धक्का लगेगा।" उसने एकाएक सध्या के

कन्धे पर सिर टिका दिया।

"मैं शारीरिक सुख नही दे सकता मैं शरीर के स्तर पर पुरुष नही हूँ ।" उसने रुक-रुक कर धीरे से कहा और कहने के बाद उसे लगा कि एक बहुत बडा अन्धड उसे छूता हुआ गुजरा है।

"नही !" आश्चर्य से सध्या की चीख निकल गयी। अब बर्फ होने की उसकी बारी थी।

"तुम झूठ बोलते हो !" सध्या ने भुवन की छाती पर मुट्ठियाँ पटकनी शुरू कर दी। ऐसा कैसे सभव है ? वह कई वर्षो से भुवन को अपना सर्वस्व सौपने के लिए बेकरार बैठी थी। सर्वस्व। न सिर्फ तन, न सिर्फ मन। दिल, दिमाग और शरीर। उसका अपना-आप। उसका सभी कुछ भुवन की अमानत था। केवल भुवन की अमानत। इसमे रत्ती-भर भावुकता नही थी।

"यह झूठ है,। कहो न, यह झूठ है।" सध्या ने दोनो हाथो से भुवन का चेहरा थाम लिया।

' यह सच है।" वह बौद्ध भिक्षु की तरह निर्द्वन्द्व और निर्विकार हो गया। मगर दूसरे ही पल उसमे सामान्य पुरुषो की सभी कमजोरियो ने सिर उठा लिया और वह कडवाहट के साथ बोला, "प्रेम की तमाम-तमाम ऊँचाइयो और भावुकता के पूरे आवेश के बावजूद औरत आखिर-कार औरत है। सगीता बैनर्जी भी औरत ही थी।"

"सगीता बैनर्जी कौन ?" सध्या की आँखें फट गयी।

"औरत।" उसने तीखेपन से कहा और सिगरेट सुलगाने लगा।

"तुम सिगरेट नही छोडोगे ?" सध्या ने धीरे से पूछा।

"छाडो, यार !" उसने एक लम्बा और गहरा कश खीचा और नॉर्मल हो गया। उसके चेहरे का तनाव हालांकि पूरी तरह नहीं मिटा था, लेकिन अब पहले जैसे चरम की स्थिति नही थी। उसने दो-तीन कश लेने के बाद सध्या को देखा और दग रह गया। सध्या की आँखें निकली पड रही थी और उसका चेहरा जगह-जगह से तिडक गया था। उसे सध्या पर दया ही आने लगी। 'आखिर वही हुआ न !' उसने सोचा। सध्या को एक सूना जगत ही मिला न !

"गो ऐंड रिलैक्स," उसने प्यार के साथ कहा, "मैं कल शाम हल-द्वानी आ रहा हूँ।"

"क्यों ?" सध्या चौंक पडी।

"ऐसे ही।" उसने लापरवाही से जवाब दिया।

"एक बात बताओगे ?" सध्या ने सहसा ही पूछा।

"हूं।" वह अभी भी लापरवाह था।

"जितनी लापरवाही से और निर्मम होकर तुम मुझे अपनी जिन्दगी से धकेल रहे हो क्या सचमुच तुम्हारा मन उतना ही कठोर है ?"

"मैं समझा नही।"

"तुम सब समझते हो, लेकिन यह नही समझते कि औरत उतनी नासमझ नही होती जितनी तुम समझते हो। क्या सिर्फ इस घटना से कि तुममे पुरुषत्व नही है मेरा यह अधिकार भी समाप्त हो जाता है कि तुम मेरे शहर मे क्यों आ रहे हो, मुझे इसकी जानकारी मिले।"

"अधिकारो का अस्तित्व सम्बन्धो के ऊपर निर्भर करता है। सम्बन्ध अगर समाप्ति की तरफ बढ रहे हो तो अधिकार या कर्त्तव्य की रेखा खींच कर उन्हे ठिठका देना उचित नही है।"

"तुम सम्बन्धो की समाप्ति क्यों चाहते हो ? क्या शारीरिक सम्बन्धो से परे और कोई सम्बन्ध आदमी और औरत के बीच नही होता ?"

"अगर सवाल सिर्फ आदमी और सिर्फ औरत का है तो मेरा जवाब है कि सम्बन्ध आखिरकार शरीर तक अवश्य पहुँचते है," भुवन ने निर्णायक स्वर मे कहा, "बहस का कोई अन्त नही होता और सब-कुछ समाप्त हो जाने के बाद तो बहस का कोई अर्थ भी नही रह जाता है।"

सध्या चुप रही और चुपचाप उसे देखती रही। क्या वास्तव मे अब सब-कुछ समाप्त हो गया है ? क्या यह सही है कि बिना शारीरिक सम्बन्धो को स्थापित किये, औरत रह नही सकती ? क्या प्यार के साथ सहवास की इच्छा अनिवार्यत जुडी है ? क्या सचमुच औरत को पुरुष ही चाहिए ?

"मुझे थोडा समय दोगे ?" सध्या ने अचानक कहा।

"जो सवाल तुम्हारे भीतर जन्म ले रहे हैं समय उन्हे नही ... सकता, सध्या डार्लिंग ! नाटक का दुखान्त स्वीकार कर लो

दुखान्त नाटकों का असर देर तक रहता है।" न चाहते हुए भी भुवन की आवाज़ कड़वी हो गयी।

'मुड़ो मत।' संध्या ने तुनक कर कहा। उसकी समूची कातरता यकायक क्रोध में तब्दील हो गयी।

"सामर्थ्यहीन होकर इस तरह के व्यंग्य कसने का हक तुम्हारे पास नहीं रह जाता।"

"संध्या !" वह उत्तेजित हो गया, मगर दूसरे ही क्षण अपने आहत मन को साथ लिये पीछे मुड़ गया।

'विदा।" उसने मुड़े-मुड़े ही भारी गले से कहा, "अब, तीसरी संगीता बैनर्जी की चाहतें यह भुवन कभी नहीं तोड़ेगा।"

"सुनो," संध्या ने उसका हाथ पकड़ लिया, "बताओगे नहीं कि संगीता बैनर्जी कौन थी ?"

"संगीता बैनर्जी एक औरत थी" उसने भरपूर नफरत के साथ जवाब दिया, "जैसे तुम एक औरत हो।"

'मेरी बात सुनो," संध्या ने तड़प कर कहा, "तुम एक-तरफा फैसला करके नहीं जा सकते ।"

लेकिन उसने सुना नहीं। वह तेज़ कदमों से आगे बढ़ता चला गया। लगातार। पीछे पलट कर देखने की न तो उसे जरूरत थी, न इच्छा और न ही हिम्मत। उसका दिमाग फटने-फटने को हो रहा था और सवालों के जत्थे इस फटते हुए दिमाग पर लगातार आक्रमण कर रहे थे।

सम्बन्धों का अन्त संध्या के साथ जिस विकृत और निर्मम तरीके से हुआ है, अपने मन से उसने ऐसा नहीं चाहा था, मगर बातें इतनी तेज़ी से फिसलती चली गयी थीं कि वह चाहकर भी कुछ नहीं कर सका। क्षणांश के लिए उसे लगा कि उसे रुक कर धैर्य के साथ संध्या की बातें सुननी चाहिए थीं, लेकिन तत्काल ही उसे अनुभव हुआ कि उसने जो भी किया है ठीक ही किया है।

घिस-घिस करके और एक छद्म से दूसरे छद्म पर पाँव टिकाते-टिकाते वह अपनी तमाम उम्र तो पार कर नहीं सकता और न उसे इस तरह ज़िंदगी गुज़ारनी ही चाहिए कि अन्त में एक बहुत बड़ी और दुखदायी

निरर्थकता ही शेष रह जाये।

कल रात उसने निर्णय कर लिया था कि अब उसकी जिंदगी का मकसद भी युद्ध होगा। बहुत सोच-विचार के बाद उसने पाया था कि शोषण और दमन की इस दुनिया मे आदमी का मकसद आखिरकार युद्ध ही है। युद्ध जो नक्सलबाडी म लडा गया था। युद्ध जो पहाडो म लडा जा रहा है। युद्ध जो लुटे हुए आदमी का सच है।

कल रात के इस फैसले के बावजूद उसका शकित मन फिर स दुविधा ग्रस्त हो गया था। वह जानना चाहता था कि पहाडो पर चल रहे आन्दोलन म उसकी भागीदारी क्या एक तरह का पलायन ही नही है?

जिन्दगी से घबराकर भागे हुए आदमी का मन्दिर के घटो को थाम लेना और जिन्दगी से घबराकर लडाई क परचम को थाम लेना क्या दोनो बातो का चरित्र एक नही है? क्या दोनो ही विकल्प पलायन नही है? प्रेम के मोह म फँसकर युद्ध क्षेत्र से भाग खडे होना और प्रेम म असफल होकर युद्ध-क्षेत्र म जा धमकना, दोनो म फर्क ही क्या है? विचारधारा की वजह से कितने लोग जग म कूदते है? कोई बेरोजगार है कोई भूखा है कोई लुट रहा है कोई गरीब है यानी हर वह शख्स जो किसी-न किसी वजह से जिंदगी से ऊब चुका है क्राति म आता है। क्या ऐसे लोगो द्वारा लायी गयी क्राति अन्तत अराजकता म नही बदल जायेगी?

मैत्री-दर्पण के दफ्तर म घुसते ही उसने ये सारे सवाल आशू पे सिर पर दे मारे और कुर्सी पर आराम की मुद्रा मे बैठकर सिगरेट पीने लगा।

आशू जरा भी विलचित नही हुआ। बहुत शालीनता और एक गहरे आत्म विश्वास के साथ उसने शब्दो पर जोर देते हुए रुक रुक कर कहा 'जीते हुए लोग क्राति क्यो चाहेंगे? विचारधारा के लिए क्राति नहीं होती है क्राति के लिए विचारधारा का जन्म होता है। जिसके पास खाने के लिए कुछ नही है उसी सर्वहारा के द्वारा लायी जाने वाली क्राति अराजकता म न बदल जाय, इसी बात के लिए क्राति की एक रणनीति है और यह रणनीति सही विचारधारा क अतर्गत ही सफलता प्राप्त कर सकती है। मुफलिसी, बदहाली और दमन शोषण के शिकार करोडो करोडो लोगो की खुशहाली के लिए क्राति ही एक मात्र विकल्प है और

इस शरीर का सही ठिकाने पर पहुँचाने के लिए जिस शख्स ने सही विचार-धारा दी थी वह भी तो है उसका नाम ... तुम वाकिफ हो—कार्ल मार्क्स। मार्क्सवाद एक शब्द भर नहीं है जैसे समाजवादी एक शोर भर नहीं है।"
आगू अपनी ग्रीव शक्ल करके मुस्कराया और भुवन को देखने लगा।

पर हद हो गया। इतना निर्द्वन्द्व होकर इस कठिन सवालों से जूझ जाना और ... निष्कर्ष निकाल लेना इतना सरल कैसे है? उसे एकाएक आगू पर प्यार आ गया और वह मर्म-लोगों से बोला, 'अड़ियाओ कॉफी पिला दे यार ... तू गजब का ... आदमी है। तूने कुछ नहीं खोया। खोया तो मैंने है। आठ वर्षों में ... मेरी ... जिन्दगी ... है और बस। खोया तो मैंने है। आठ बेशकीमती वर्षों का खोया है।"

खिड़की से झाँककर आगू ने दो कॉफी के लिए किसी को कहा और भुवन से बोला, 'तो कब शाम जा रहे हो?"

आज शाम," उसने ... से जवाब दिया, "कैमरे का बन्दोबस्त कर दो।"

"और कोई हुक्म मेरी सरकार का?" आगू ने हँस कर कहा।

"ठीक है ... ठीक है ...।' भुवन ने ठहाका लगाया और नीचे बने रेस्त्रां को देखने लगा, जहाँ से कॉफी आने वाली थी।

सुपरिन्टेंडेंट पुलिस मिस्टर शमशेर चौधरी की परेशानी का कारण हल-द्वानी से निकलने वाला जुलूस बिलकुल नहीं था। इस तरह के सैकड़ों जुलूस उन्होंने अपनी जिन्दगी में देखे थे और कुचल दिये थे। नैनीताल से अपने दायें बाजू डी० एस० पी० खन्ना को उन्होंने इन पहाड़ी छोकरों का दिमाग ठिकाने लगाने के लिए आज ही हल्द्वानी रवाना कर दिया था। अगर 'रंग' को बीच में न लाया जाये तो आतंक और क्रूरता में डी० एस० पी० खन्ना मिस्टर चौधरी से उन्नीस नहीं था।

हल्द्वानी की थाने पुलिस को भी मिस्टर चौधरी ने विशेष आदेश जारी कर दिये थे और इस जुलूस के विरोधी सर्वोदयी नेताओं के साथ आधे घंटे की गुप्त वार्ता में भी डी० एम० के साथ भाग लेकर हल्द्वानी-

प्रशासन को डी० एम० के आदेश पहुँचवा दिये थे। सारी तैयारियाँ मुकम्मल थी, इसलिए जुलूस उनकी चिंता का विषय नहीं था।

नैनीताल में कोई बवंडर खड़ा न हो और दूर-दूर से घूमने आये सम्भ्रान्त नागरिकों और पर्यटकों को कोई परेशानी न हो, इसके भी उन्होंने सारे बन्दोबस्त कर लिये थे। स्वयं उनकी ड्यूटी वन-मंत्री के आदेश पर छह तारीख को नैनीताल में ही थी। वन-मंत्री इन दिनों सपरिवार नैनीताल में ही थे और इस बात की पूरी आशंका थी कि नैनीताल कांड में गिरफ़्तार छात्रों के समर्थक कहीं मंत्री-महोदय को जान-माल का नुकसान न पहुँचा दें। उनकी सुरक्षा के कड़े प्रयत्न किये गये थे।

छात्रों और आम जनता का खुला आरोप था कि नैनीताल-क्लब को मंत्री-महोदय के इशारे पर ही सरकारी गुंडों द्वारा आग लगवायी गयी है, ताकि आन्दोलन को बदनाम किया जा सके और विद्रोही छात्र-नेताओं को इस कांड की आड़ में गिरफ़्तार भी किया जा सके। छात्रों ने इस कांड की न्यायिक जाँच की माँग की थी जिसके लिए प्रशासन ने अपनी सहमति भी दे दी थी पर अचानक, पता नहीं क्यों, किस बड़े राजनेता के आदेशानुसार, इस न्यायिक जाँच की स्वीकृति को भीतर-ही-भीतर ख़त्म कर दिया गया और तमाम छात्र-नेताओं को गिरफ़्तार करके जेल भेज दिया गया।

जनता का आरोप था कि न्यायिक जाँच के परिणाम चूंकि छात्रों के पक्ष में और वन-मंत्री के विपक्ष में जाते, इसीलिए उन्होंने केन्द्र से साँठ-गाँठ करके न्यायिक जाँच की माँग को रद्द करवा दिया और छात्र-नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया। जनता का गुस्सा वन-मंत्री के विरुद्ध इतना क्रूर था कि अगर वे पुलिस के पहरे से बाहर निकल आते तो शायद उनकी बोटियाँ तक बच पाना नामुमकिन था। इसीलिए प्रशासन के भी बहुत कम लोगों को यह जानकारी थी कि वन-मंत्री नैनीताल में ही हैं और उनके साथ पर्वतीय विकास-मंत्री भी हैं। पुलिस का पहरा सचमुच बहुत सख़्त था और प्रशासनिक स्तर के सभी इन्तज़ामात दुरुस्त थे। एस० पी० चौधरी को इस तरफ़ से कोई चिन्ता नहीं थी।

एस० पी० चौधरी की चिन्ता का कारण नितान्त व्यक्तिगत था। अपनी इकलौती बेटी जया के रंग-ढंग उनकी समझ के बाहर होते जा रहे

थे। अपनी सरकारी व्यस्तताओं के कारण जया के साथ उनके संवाद पहले ही बहुत कम होते थे, लेकिन बाकी दिनों में वे यह अनुभव कर रहे थे कि पहले की तरह अब वे और जया नाश्ते और डिनर के वक्त भी आपस में नहीं मिल रहे हैं। हालांकि कई बार वे रात के खाने और सुबह के नाश्ते के वक्त खुद ही घर में नहीं होते थे, लेकिन जब भी होते थे, जया उनके पास होती थी।

मगर अब यह सम्पर्क भी टूट गया है। शुरू में उन्होंने इस तरफ खास तवज्जह नहीं दी थी, लेकिन एक-दो बार जब रात के खाने के वक्त उन्होंने जया को याद किया था तो नौकर ने सूचना दी थी कि बिटिया घर नहीं है। उन्होंने तब आश्चर्य में निर्णय किया था कि वे शीघ्र ही जया से पूछेंगे कि रात को वह घर से बाहर क्यों रहती है? लेकिन पहाड़ों पर तेजी से फैलते जा रहे यनान्दोलन की लगातार व्यस्तता ने उनका यह निर्णय पूरा नहीं होने दिया और फिर बात उनकी याददाश्त से फिसल गयी।

सबसे तेज झटका उन्हें पहली बार तब लगा था जब एक बार वे अपने एक साप्ताहिक दौरे के बाद घर आये थे तो उन्हें मालूम चला था कि, बिटिया तीन रोज से घर नहीं आयी। उस रात वे पाइप पीते हुए तमाम रात जागते रहे थे और अगले दिन सुबह नौ बजे होने वाली एक 'आवश्यक बैठक' में भी नहीं जा सके थे। लगभग बारह बजे तक उन्होंने जया की प्रतीक्षा की थी और अन्ततः क्रोध में उफनते हुए ऑफिस चले गये थे। रात नौ बजे वापस घर आकर उन्हें नौकर के द्वारा सूचना मिली थी कि बिटिया खाना खा कर अपने सोने के कमरे में चली गयी है।

"अगर वह सो गयी हो तो उसे जगा कर लाओ।" चौधरी साहब ने पहली बार इस घर की मर्यादाओं, सभ्यता और नियमों को ठोकर मारते हुए कोई आदेश दिया था।

कुछ ही देर बाद जया चौधरी चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिये वहाँ उपस्थित थी। उसकी जिन्दगी की यह पहली घटना थी कि बेडरूम में प्रवेश कर जाने के बाद उसे बुलाया गया हो। वह आशंकित हो उठी थी, लेकिन अपने चेहरे पर उसने इस किस्म का कोई भी भाव नहीं आने दिया था जिससे पापा कुछ भाँप पाते और उनका क्रोध भड़क उठता। वह सिर्फ

चौंकी हुई थी।

"क्या हुआ पापा, आप कुछ परेशान-से लग रहे है?" जया ने आते ही मोर्चा सभाल कर दाँव मारा था। दाँव निशाने पर लगा था। एकदम।

मिस्टर चौधरी हतप्रभ रह गये थे। उन्हे एकाएक समझ नही आया था कि अपनी बात कहां से शुरू करें और कैसे? जया के चेहरे से ऐसा कतई नही लग रहा था कि उसने कोई गलत काम किया है। उन्हे लगा था कि वे कई महीनो के बाद अपनी बेटी के सामने खडे है। और बात सच भी थी। लगभग दो महीनो के बाद वे अपनी बेटी का चेहरा देख रहे थे। वे कुछ भावुक-से हुए, लेकिन तीन रोज घर से बिना बताये अनुपस्थित रहने की जया की गलत हरकत को याद करते ही क्रोध मे भर उठे।

"क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम कई कई दिनो तक घर से गायब रहकर कहाँ जाती हो, क्या किया करती हो?" मिस्टर चौधरी ने आखिर पूछ ही लिया, हालांकि इतना कठोर सवाल करने का इरादा वे छोड चुके थे।

'ओ हो!" जया मुसकरायी, "तो एस० पी० चौधरी को कभी-कभी याद आ जाता है कि वे एक जवान लडकी के पिता भी है!" जया ने यह सवाद अपनी शरारती मुद्रा मे ही कहा था, क्योकि उसे पता था कि शब्दों के तीखेपन के साथ यदि इस वक्त लहजा भी तीखा हुआ तो उसके पिता खूंखार हो जायेंगे।

"अगर आप केवल इस बात से परेशान हैं कि मैं कहाँ जाती हूँ तो यह चिन्ता का विषय नही है," जया ने लापरवाही से कहा, ' मैं अपनी सहेलियों के साथ रानीखेत, अलमोडा और नैनीताल के टूर पर गयी थी जस्ट फॉर एन्जॉय और इस तरह घूमने का मुझे हक है। थिंक, लाइफ ए ह्यूमन बीइंग इस इतने बडे सुनसान और बियाबान घर में मां, बाप भाई और बहनों से महरूम यह जया चौधरी क्या अपना सिर दीवारों से टकराती रहे? क्या आपने कभी सोचा है कि आन्दोलनो और अपराधो को कुचल देने के आपके सरकारी कर्तव्य के अलावा भी एक छोटी-सी दुनिया है जहाँ आपको कुछ फर्ज पूरे करने थे वहरहाल! मैं सोना चाहती हूँ।" जया ने बेहद शालीनता से इस सनसनाते हुए सवाद

की अभिव्यक्ति दी और अपने कमरे की तरफ मुड़ गयी। वह इस बात से प्रसन्न थी कि पिता के क्रोध का उसने अपने अजेय हथियार से भोथरा कर दिया है।

जया के धाराप्रवाह संवाद से मिस्टर चौधरी केवल भौंचक्के ही नहीं हुए वरन् लड़खड़ा भी गये। एक हताश आदमी की तरह उन्होंने एक ठंडी साँस भरी थी और चुपचाप खाने की मेज पर बैठ गये थे। डरा हुआ बूढ़ा नौकर सहम-सहम कर खाना लगाने लगा था। उसे लग रहा था कि यही बिटिया का गुस्सा चौधरी साहब उसके ऊपर न उतार दें।

लेकिन इस घटना के बाद परिवार के सन्दर्भ में, चौधरी साहब को कई रोज तक फिर गुस्सा नहीं आया। जया के प्रति उनके मन में शंका का का स्थान सहज करुणा ने ले लिया था और वे पुनः अपने सरकारी चक्र में उलझ गये थे। वे जया के प्रति निश्चिन्त थे।

मगर यह निश्चिन्तता ज्यादा दिन नहीं चल पायी और जया के बारे में उन्हें इधर उधर कई जगहों से हैरत-अंगेज समाचार मिलने लगे

नैनीताल में धारा एक सौ चवालिस तोड़कर 'छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी' और 'उत्तराखंड संघर्ष वाहिनी' के डेढ़ सौ कार्यकर्त्ताओं ने अपनी गिरफ्तारी दी, जिनमें जया चौधरी एक थी। उसे छोड़ दिया गया।

हल्द्वानी में आयोजित लगभग चार-पाँच सौ लड़कियों की एक सभा में जया चौधरी को सरकार-विरोधी भाषण देते हुए पाया गया।

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार, उत्तर प्रदेश के खतरनाक और हिंसा-समर्थक छात्र-नेताओं की बागेश्वर में हुई एक गुप्त मीटिंग में जया चौधरी जाती हुई देखी गयी 'जनवादी कला-साहित्य मोर्चा—उत्तराखंड' द्वारा किये जाने वाले सरकार-विरोधी नाटक 'क्रूर कुल्हाड़ा मारेगा' में जया चौधरी ने ग्रामीण पहाड़ी युवती का रोल अदा किया। यह नाटक हल्द्वानी और नैनीताल के गेठिया, गौलापार, तिरछाखेत, भीमताल, रानीबाग और परवाडागर इलाकों में सैकड़ों लोगों ने देखा। रामनगर और काशीपुर में आयोजित सैकड़ों लोगों की सभा में जया चौधरी ने अपने साथियों के साथ आन्दोलन के समर्थन में इन्क्लाबी परचे बाँटे रुद्रपुर में जया चौधरी ।

एस० पी० शमशेर चौधरी का दिमाग जैसे एक भयानक विस्फोट के साथ बिखर गया। इन समाचारों को सुनकर उन्हें लगा कि पुलिस-जिन्दगी के उनके स्वर्णिम इतिहास पर काले काले साये मंडराने लगे हैं। यह लड़की खुद तो डूबेगी ही उन्हें भी ले डूबेगी। इस बार उन्होंने क्रोध नहीं, हताशा और बेचारगी का अनुभव किया। उनके भीतर कहीं से आवाज उठी कि जया चौधरी अब उनके हाथ से फिसल गयी है और उसे वापस बुलाना नकटु बाप की जुबान खुलवाने से कम दुष्कर नहीं है। फिर भी, वे कोशिश तो करेंगे ही। आफ्टर ऑल, बाप हैं वे। उन्हें दुख हुआ था और पहली बार वे पूरी ईमानदारी के साथ चिंतित हुए थे।

हलद्वानी वाले विशाल जुलूस और आन्दोलन के लगातार व्यापक होते चले जाने के कारण उनकी व्यस्तताएँ बढ़ गयी थीं। कई रोज से वे जया की खोज-खबर भी नहीं रख पाये थे। उनकी चिन्ता इसलिए और भी बढ़ गयी थी क्योंकि जया पिछले पाँच रोज से घर में मौजूद नहीं थी और उन्हें शंका थी कि कहीं हलद्वानी वाले जुलूस में उनकी बेटी न हो? अगर ऐसा हुआ तो इस बार बहुत गड़बड़ हो जायेगी। इस जुलूस के दमन की पूरी संभावनाएँ थीं और उन्होंने अपने सभी मातहतों को इस सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश भी दे दिये थे। अब वे यह तो कह नहीं सकते थे कि अगर लाठी चार्ज करना पड़े तो देख लिया जाये कि कोई लाठी कहीं उनकी बेटी के कोमल शरीर पर अपने बदशक्ल निशान न बना दे।

मिस्टर चौधरी की चिन्ता यही थी। खुद उन्हें उस दिन नैनीताल में रहना था यह और भी असहाय स्थिति थी।

सारे ऊहापोह के बाद मिस्टर चौधरी ने अन्त में डी० एस० पी० खन्ना को यह निर्देश भेज ही दिया था कि यदि जुलूस में उनकी बेटी दिखायी दे तो उसे चुपचाप गिरफ्तार करके घर भेज दिया जाये और मिस्टर चौधरी को तत्काल सूचना दी जाये। इस निर्देश के बाद भी इनके मन से चिन्ता और बेचैनी ने अपनी जगह रिक्त नहीं की थी।

इस बात की गारंटी कौन दे सकता था कि इतना बड़ा जुलूस एक लड़की को शान्ति से गिरफ्तार होता देखता रहेगा और उग्र नहीं हो जायेगा?

तीन पंक्तियों म कतारबद्ध और अनुशासित हलद्वानी के विशाल जुलूस म सबस आगे तीन लडकियाँ थी और उन तीन लडकियो मे स एक का नाम जया चौधरी था। इन तीन लडकियो के पीछे करीब आठ सौ लडकियाँ थी। इन आठ सौ लडकियो क पीछे पूरे कुमाऊँ जनपद का प्रतिनिधित्व करन वाले तीन हजार छात्र और युवक थे और उनक बाद थ लगभग एक हजार मजदूर, अध्यापक और अन्य शहरवासी। जुलूस के हाथो म पोस्टर्स बैनस और फेस्टून थे जिन पर अलग-अलग नारे और माँगें अकित थी। जुलूस के दोनो तरफ पुलिस और पी० ए० सी० के बन्दूकधारी जवान थे—किसी भी वारदात के प्रति सतक और मुस्तैद। जुलूस नारे लगाता हुआ आगे बढ रहा था

—हर जोर जुलम की टक्कर म
—सघर्ष हमारा नारा है।
—नैनीताल काड मे गिरफ्तार साथियो को
—रिहा करो रिहा करो ।
—तानाशाही नही चलेगी
—नही चलेगी नही चलेगी ।

हजारो गलो से फूटते जोशीले नारे सुनकर और जुलूस म शामिल लोगो का उत्साह देखकर क्षणाश के लिए डी० एस० पी० खन्ना की टाँगो म आतक का सन्नाटा दौड गया। वह एस० पी० साहब की बेटी जया चौधरी को पहचान गया जो हवा मे मुटिठयाँ उछाल कर चीख रही थी दमन के आगे नही झुकेंगे ।

नही झुकेंगे नही झुकेंगे । जया के पीछे वाली सैकडो लडकियाँ गुर्रायी थी।

डी० एस० पी० खन्ना की समझ को सहसा ही जग सा लग गया। वह तुरन्त ही यह निर्णय नही ले सका कि क्या करे ? जया चौधरी जुलूस की नेत्री बनी हुई थी और जुलूस की नेत्री को गिरफ्तार करके डी० एस० पी० खन्ना तबाही को निमत्रण नहीं दे सकता था। दूसरी तरफ, जया चौधरी क्रमश उग्र होती जा रही थी।

—टाटा बिडला की सरकार

—नही चलेगी, नही चलेगी

—तानाशाही की सरकार

—नही चलेगी नही चलेगी।

—आधी रोटी खायेंगे

—इन्कलाब लायेंगे।

डी० एस० पी० खन्ना का शक सौ प्रतिशत यकीन में बदल गया कि आन्दोलन की बागडोर सर्वोदय नेताओ के हाथ से निकल गयी है। शायद यही कारण है कि आन्दोलन को कुचलने के आदेश दिल्ली से जारी हो चुके हैं।

नारे लगाता हुआ, मुट्ठियाँ उछालता हुआ जुलूस लगातार आगे बढ रहा था और जुलूस के साथ-साथ ही आगे बढता हुआ डी० एस० पी० खन्ना जया चौधरी को किसी तरह गिरफ्तार कर लेने की फिराक में चौकन्नी आँखो से उसे घूर रहा था—मौके की तलाश मे कि तभी जया की आवाज उसके कानो पडी

—पुलिस हमारी भाई है

—उससे नही लडाई है!

—पी० ए० सी० वापस जाओ

—वापस जाओ वापस जाओ !

इसके बाद इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा उठा और रिपीट होने लगा जुलूस में कदम-ताल पर सधी हुई, अनुशासित मगर गरजदार आवाज म

—इन्कलाब जिन्दाबाद

—जिन्दाबा जि दाबाद।

—इन्कलाब जि दाबाद

—जिन्दाबाद इन्कलाब।

—यू० के० एस० यू० जिन्दाबाद

—जिन्दाबाद जिन्दाबाद ।

डी० एस० पी० खन्ना बुरी तरह चौक पडा। ओ हो उसने सोचा तो इसमे यू० के० एस० यू० भी शामिल है। अभी वह चौंकने की स्थिति

में ही था कि एम० पी० चौधरी की लड़की जया चौधरी ने अपनी दबंग आवाज़ में कहा, "यू० के० एस० यू० को लाल सलाम...!"

—लाल सलाम लाल सलाम।

. रैंड सेल्यूट रैंड सेल्यूट—रैंड सेल्यूट टु यू० के० एस० यू०।

—रैड सेल्यूट रैंड सेल्यूट—रैंड सेल्यूट टु यू० के० एस यू०।

जुलूस ने दोहराया और डी० एस० पी० खन्ना का चेहरा आतंक और आश्चर्य से स्याह पड़ गया। तो, क्या चौधरी साहब की बेटी भी यू० के० एस० यू० से सम्बन्धित है? खन्ना ने सोचा, और एम० पी० साहब चुप हैं?

यू० के० एस० यू०। गढ़वाल और कुमाऊँ और दिल्ली और उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल तथा केरल के कई इलाकों में पिछले छह वर्ष से, गुप्त रूप से कार्यरत नक्सली क्रांतिकारियों का छात्र संगठन।

डी० एस० पी० खन्ना पसीने से लथपथ हो गया।

जया चौधरी को जुलूस का नेतृत्व करते देखकर जो शख्स सबसे ज्यादा चौंकन्ना गया था और अवाक् रह गया था, वह था विभिन्न कोणों से जुलूस की भंगिमाओं को कैमरे में गिरफ्तार करता हुआ, भुवन किशोर।

दिमाग पर ज़रा-सा ज़ोर डालते ही उसे अपनी क्लास-फैलो जया चौधरी याद हो आयी थी—अलमस्त, बेपरवाह और दबंग लड़की जया जिसकी 'रैगिंग' के शिकार नये स्टूडैन्ट्स रो तक दिया करते थे। प्राध्यापक जिसकी शक्ल देखकर बिदक उठते थे।

कैसे-कैसे लोग बदल गये हैं इस बीच। भुवन किशोर ने विस्मय के तेज आवेग में घिर कर सोचा था। और वह, भुवन किशोर, समाज की चेतना को परिप्लुत करने वाला हिन्दी का लेखक, इश्कबाज़ी और सैक्स के चुतियापों में ही फँसा रहा और एक लम्बा समय यूँ ही गुज़र गया आवारा और एक नाकारा और दिशाहारा।

अचानक, भुवन किशोर दूसरी बार चौंक पड़ा। पी० ए० सी० के बन्दूकधारी जवानों ने जुलूस का रास्ता रोक लिया था और जया चौधरी किसी पुलिस ऑफिसर से मुट्ठियाँ बाँधकर बहस कर रही थी कि तभी उस पुलिस ऑफिसर ने तीन-चार जवानों की मदद से जया को पुलिस-जीप में फेंक दिया और इसके तुरन्त बाद सबसे आगे खड़ी निहत्थी लड़कियों पर तड़-तड़-तड़ातड़ की बर्बर आवाज के साथ लाठियाँ बरसने लगी। भुवन ने तुरत फुरत दो-तीन स्नैप लिये और पिटती हुई लड़कियों के पीछे देखने लगा, जहाँ से क्रोध में तमतमाते हुए उत्तेजित लड़के भाग चले आ रहे थे।

जीप में फेंके जाने के दौरान ही जया चौधरी को सारी कहानी समझ आ गयी थी। जीप में गिरते ही वह गुर्राकर पलट गयी।

"सरकारी कुत्ते !" वह दाँत भींच कर बोली और इससे पहले कि डी० एस० पी० खन्ना जीप स्टार्ट कर पाता, जया ने अपने अगल-बगल खड़े दोनों पुलिस-कान्सटेबलों से स्वयं को मुक्त करा लिया और तेज झटके से अपनी दो उँगलियाँ खन्ना की दोनों आँखों में घुसेड़ दीं। खन्ना इस आकस्मिक हमले को सँभाल नहीं सका। उसकी आँखों में घातक चोट तो नहीं लगी थी मगर एकबारगी उसका पूरा बदन तकलीफ से ऐंठ गया। जया जीप से नीचे कूद चुकी थी। मगर इससे पहले कि वह भाग पाती, नीचे खड़े तीन सिपाहियों की लाठियाँ उसके ऊपर तड़ा-तड़ बरस गयीं। वह तिलमिला कर जमीन पर लुढ़क गयी। सिर पर पड़ने वाली एक लाठी के जोरदार प्रहार से उसकी चेतना क्षीण होती चली गयी और अन्ततः वह होश खो बैठी। उसका सिर फट गया था।

'उल्लू के पट्ठो, यह एस० पी० साहब की बेटी है।' डी० एस० पी० खन्ना ने गुर्राकर कहा और जया को हॉस्पिटल ले जाने का निर्देश देकर जुलूस की तरफ पलट गया।

भुवन समझ नहीं सका कि पुलिस को लाठी चार्ज का आदेश क्यों दिया गया है? जुलूस तो आक्रामक भी नहीं हुआ था। वह कूद कर एक ऊँचे पत्थर पर खड़ा हो गया था और खटाखट फोटो खींचे जा रहा था। उसे लगा, पुलिस पागल हो गयी है। पुलिस की तेल पिलायी लाठियाँ बेरहमी

मे ज़द में आने वालों के सिर, टाँगें, हाथ और कमर तोड रही थी। जुलूस में सबसे आगे लड़कियाँ थी और लाठियो के इस अन्धे और निर्मम प्रहार को वे ही झेल रही थी।

एक तरफ़ दो पुलिस वालों ने एक लड़की को पकड़ लिया था और उसका ब्लाउज चर्र से फाड़ डाला था। भयातुर लडकी की चीख से भुवन थर्रा गया। इतने भयानक दृश्यों की उसने कल्पना भी नही की थी। पुलिस के दिमाग में सचमुच वहशियत ने अपना सिर उठा लिया था। तीन सिपाहियों ने एक लडकी की कमीज को तार-तार कर दिया था और उसे अपनी कठोर बाँहो की गिरफ़्त मे ले लिया था। लडकी पखकटी मुर्गी की तरह आहत और भयाक्रात थी। लगता था, अजाम के आतंक ने लड़की की आवाज छीन ली है। जैसे ही लडकी की सलवार फटने का दृश्य आया और लडकी की तड़प भरी चीख भुवन के कानों से टकरायी, उसकी लेखनीय गरिमा और शालीनता के परखचे उड़ गये। एक सिपाही ने हाँफ हाँफ कर हू-हू की आवाज़ करते हुए लडकी के उरोजों को कस कर पकड लिया था और बाकी दोनों भी अपनी बन्दूकें फेंक कर लडकी का अन्डर-वीयर फाडने लगे थे कि तभी भुवन बिजली की तरह कौंधा और उसने एक भारी पत्थर उठाकर एक सिपाही के सिर पर पटक दिया। खोपडी चटाख से टूट गयी और खून का फव्वारा उछल पडा। शेष दो में से एक सिपाही 'खून-खून' करता पीछे हट गया और दूसरा जमीन पर गिरी अपनी बन्दूक उठाने झपटा, मगर इस बीच भुवन उछल कर मुड़ा और बस-स्टैंड की दिशा में भागता चला गया। दो पुलिस वाले उसका पीछा करने लगे थे।

इस घटना से हतप्रभ और भयाक्रात लड़की नग्नावस्था मे ही, बचने के लिए तेजी से भागी, मगर पीछे हटते पुलिस वालों की एक बडी भीड़ के धक्के से ज़मीन पर गिर पडी। जमीन पर गिरते ही उसके लगभग नंगे जिस्म को पुलिस के सैकड़ो पैरो ने निर्ममता से रौंद दिया। लडकी की चीख तक रुँध गयी।

पुलिस के एकाएक पीछे हटने का कारण था—उत्तेजित लडकों द्वारा पत्थरों से किया गया ज़बरदस्त और सामूहिक आक्रमण। पत्थरों की इन

भारी बौछार से पुलिस की घेराबन्दी टूट गयी थी और वह छितरा कर दायें-बायें और पीछे की तरफ भागी थी। समूचा वातावरण एक विचित्र-से कोलाहल से भर गया था। हो-हल्ला, चीख-पुकार, आहों-कराहों, लाठियों की तडातड और पत्थरों के टकराव का मिला-जुला कोलाहल।

और इस कोलाहल को चीरती हुई एक कडक आवाज़ गूंजी, फायर!

और इस अधिकारिक आवाज़ के तुरन्त बाद सत्ता बन्दूकों की नलियों से बहने लगी। पुलिस की बन्दूकें पहले तो आकाश की तरफ मुंह करके चली, फिर उन्होंने उत्तेजित और आनामय लडकों के घुटनों और पैरों पर अपना हमला केन्द्रित कर दिया। पुलिस के इस बर्बर आक्रमण को जुलूस ज्यादा देर तक नहीं झेल सका और भाग लिया। घायल लडके, पिसी हुई लडकियाँ, टूटती कराह और रिसता हुआ खून पीछे छूट गया।

जुलूस बिखर चुका था। आँखों से दिखायी पडते भागते लडकों, मजदूरों और लडकियों के पीछे उन्मत्त पुलिस दौड रही थी—हाथों मे बन्दूक और दिमाग म तेज़ गुस्सा लिये। इस बार जुलूस नहीं, पुलिस बेकाबू हो गयी थी। लगभग डेढ सौ पुलिस वालों की एक टुकडी कचहरी म घुस गयी थी और दायी तरफ वाली नीची दीवार फाँद कर बाहर निकलने लगी थी। लडके लम्बे रास्ते से भागते हुए गुजर रहे थे और पुलिस जानती थी कि जब तक भागते हुए लडके कोर्ट की दायी दीवार के सामने स गुजरेंगे तब तक वह सीधे कोर्ट म घुस कर दायी तरफ वाली नीची दीवार फाँद कर उन्हें रास्त म ही रोक लेगी और लडके घिर जायेंगे। इसी कारण पुलिस ने कोट वाला रास्ता चुन लिया था और दना दन दीवार फाँदने लगी थी। पुलिस की इस भागमभाग से वकीलो की कुर्सियाँ मज़ें इधर-उधर गिरने लगी थी और एक-दो वकीलों तथा उनके क्लाइन्ट के छोटी-मोटी चोटें भी आ गयी थी। पुलिस इतने अप्रत्याशित तरीके स घुसी थी कि लाग-बाग सतर्क भी नहीं हो पाये थ।

जुलूस म शामिल कुछ वकील भी बचन के लिए भागकर कोर्ट म ही घुसे थे, मगर पुलिस को कोर्ट म भी देख वे क्रोध से बौखला गये और उन्होंने पुलिस की इस नामवार हरकत के विरुद्ध रोष प्रकट करते हुए पुलिस के खिलाफ नारेबाजी प्रारम्भ कर दी।

जुनून की चिंगारियाँ आँखों में लिये दीवार फाँदते पुलिस के जवान एकाएक थम गये। क्षणांश के लिए उन्होंने कुछ सोचा और फिर उन्होंने अपनी बन्दूकें उलटी पकड़ ली। इसके बाद वे नारे लगाते वकीलों पर टूट पड़े और उनकी बन्दूकों के हत्थे वकीलों की कमर, गरदन, टाँगों और हाथों पर बरसने लगे। कुछ ही देर बाद पूरे कोर्ट में घायल वकीलों और उलटी पड़ी कुर्सी मेजों तथा टूटे बक्सों के अलावा कुछ भी शेष नहीं बचा। इसके बाद उत्तेजित पुलिस वाले कोर्ट की एकमात्र चाय, मिठाई और पूरी छोले की दुकान पर झपट पड़े।

दुकान के नौकर पहले ही भाग खड़े हुए थे। सिर्फ मालिक था जो फटाफट दुकान बन्द कर रहा था और थर-थर काँप रहा था। उसकी जिन्दगी का यह पहला वाकया था और भय के साथ-साथ उसकी आँखों में अचरज भी था। पुलिस के सिपाहियों ने दुकान के मोटे मालिक को धक्के मारकर बगल वाले नाले में गिरा दिया और इसके बाद उन्होंने अल्मारियों के शीशे तोड़कर मिठाइयाँ लूटनी शुरू कर दी। थोड़ी ही देर बाद वे हल्ला मचाते हुए चिड़ियाघर से भागे जंगली खतरनाक जानवरों की तरह सड़कों पर निकल पड़े।

सड़कें जन शून्य थीं। दुकानों के शटर बन्द थे और तूफान गुजर जाने के बाद पायी गयी तबाही की मनहूस शान्ति साँय साँय कर रही थी।

डी० एस० पी० खन्ना का सिर तेज दर्द से फटने लगा। जिस बात की उसे आशंका थी वह होकर रही थी। यह बात उसकी समझ से परे चली गयी थी कि जब जुलूस शान्तिपूर्वक तरीके से गुजरता जा रहा था तो एस० डी० एम० साहब ने उसे लाठी-चार्ज का आदेश क्यों दिया था? उसने अगर मगर करने की कोशिश की थी लेकिन एस० डी०एम० साहब ने उसे सलाह दी थी कि वह चुपचाप आदेश का पालन करे। आदेश मिनिस्ट्री के हैं और स्वयं जिलाधीश महोदय इस वक्त हल्द्वानी में उपस्थित हैं। वह चुप रह गया था और लाठी चार्ज के आदेश से पूर्व उसने जया चौधरी का 'किडनैप' करने का प्रयत्न भी किया था, लेकिन नाकामयाब रहा। अब उसका दिमाग यह सोच सोच कर बौखलाया जा रहा था कि वह एस० पी० साहब के सामने कैसे पड़ेगा? उनसे कैसे कहेगा कि आपके

निर्देश के बावजूद जया का सिर जख्मी होने से मैं बचा नही सका।

अन्त मे उसने यह सोचकर सन्तोष कर लिया कि एस० पी० साहब भारत सरकार से बडे नही है और ठीक उसी की तरह वे भी सरकारी गुलाम ही है। जब आदेश ही मिनिस्ट्री मे आये है तो जुलूस म एस० पी० की बेटी है या डी० एम० का लडका, क्या फर्क पडता है? मिनिस्ट्री से बडी कोई चीज नही है—उसन सोचा और जीप म जाकर बैठ गया। काफी देर तक वह जीप मे बैठा-बैठा घायलो को पुलिस-वैन म पटके जाते देखता रहा।

कुल तीन सौ सात लडके लडकियो और मजदूरो को गिरफ्तार किया गया था।

भुवन किशोर इस मीटिंग मे देर मे पहुँच सका। उसके दो कारण थे। एक तो उसे नैनीताल के भूगोल का अच्छी तरह ज्ञान नही था, दूसरे-मीटिंग स्थल पर पहुँचन के लिए उसे आशू न जिस जगह का पता दिया वहाँ केवल दो लडके बैठे हुए अखबार पढ रहे थ।

"आपका शुभ नाम?" एक न पूछा था।

'दस फरवरी!" भुवन ने आशू के निर्देशानुसार ही जवाब दिया।

"इधर से आइये। लडका खडा हो गया और भुवन को कमरे के पिछले दरवाजे की तरफ ले गया। खिडकी म झाँक कर सन्तुष्ट होने पर उसने पिछले दरवाजे से भुवन को निकाल दिया और कहा, "मल्लीताल के 'रोजवड' रेस्तराँ मे मिलने वाले साथी आपको सही जगह पहुँचा देंगे।"

उसने पूछना चाहा था कि यह 'रोजवड' किस जगह पर है और वहाँ मिलने वाले लोगो की पहचान कैसे होगी? मगर तब तक दरवाजा बन्द हो चुका था। उसने सोचा कि वह मीटिंग अटेन्ड करने का मोह त्याग दे और वापस होटल मे जाकर कुछ पढ-लिख ले तो ज्यादा बेहतर रहेगा, मगर फिर भी वह मल्लीताल की तरफ चल पडा।

अचानक उसे लगा कि एक आदमी उसका पीछा कर रहा है। वह सतर्क हो गया। इस पीछा करते आदमी को किसी भी कीमत पर यह पता

नही चलना चाहिए कि वह कहाँ जाना चाहता है—भुवन ने सोचा और टूरिस्ट होटल' म प्रवेश कर गया। होटल के टैरेस पर जाकर उसने देखा कि वह आदमी होटल के सामने खडा हुआ सिगरेट पी रहा था और उसकी आँखें होटल के मेन गेट पर ही केन्द्रित थी। भुवन नीचे उतर आया और पीछे की तरफ से गली म निकल गया। यह गली बेहद सँकरी और दुर्गन्ध-युक्त थी मगर थी बहुत लम्बी और वह बगैर किसी की नजर म पडे सीधा मल्लीताल के चौराहे पर पहुँच सकता था। कैशार्यावस्था मे पढे हुए जेम्स बॉन्ड के उपन्यासो के बयानक और दृश्य याद करता हुआ वह तेजी से आगे बढने लगा। उसने तय कर लिया कि चाहे जितनी भी मगजपच्ची करनी पडे वह मीटिंग स्थल तक जरूर ही पहुँचेगा।

लेकिन उसे ज्यादा मेहनत नहीं करनी पडी। अभी वह गली के मुहाने पर ही था जब उसने ठीक सामने दो मंजिला रोजवुड' की लाल पत्थरो वाली इमारत को देख लिया। प्रसन्नता के आवेग मे भरकर एक क्षण के लिए वह रुका सिगरेट सुलगायी और रेस्तराँ म घुसता चला गया।

अब ? उसने सोचा। वह एक हॉल मे खडा था जिसके एक तरफ 'रिसेप्शन था और दूसरी तरफ ऊपर जाने के लिए सीढियाँ। हॉल के बीच म चारो तरफ कुर्सियाँ मजें लगी थी, बैरे इधर-उधर भागते फिर रहे थे और लोगो को चाय, कॉफी तथा अन्य चीजें सर्व कर रहे थे।

वह कॉनर वाली एक मज पर चला गया और हॉल मे बैठे लोगो का मुआयना करने लगा। वह समझ नही पा रहा था कि यहाँ उसे कौन और कैसे मिलेगा ? वह किसी को भी पहचानता नही है और आशू ने भी कुछ स्पष्ट नही किया है।

व्हाट डू यू वान्ट सर? एक नौजवान बैरे ने उसके सामने खूबसूरत सा मीनू रख दिया।

' कॉफी। उसने बगैर मीनू देखे आदेश दिया और हॉल के गेट की तरफ देखने लगा जहाँ म चार लडके और एक लडकी अन्दर आ रहे थे।

शायद, यही व लोग हैं उसन सोचा और उनके पास जाने के लिए उठने लगा, लेकिन तभी उसन सोचा कि उन पाँचो के पीछे वही आदमी हाल म घुसा जिसे उसने अपना पीछा करत हुए दखा था। उसने तुरन्त

अपनी नजरें सामने पड़े मीनू पर केन्द्रित कर दी और ध्यान से मीनू पढ़ने लगा।

'अरे ?' वह चौंक गया। मीनू में खाने-पीने की बीस वस्तुओं के बाद सबसे अन्त में इक्कीसवें नम्बर के सामने पेन्सिल से 'दस फरवरी' लिखा हुआ था। वह हैरान रह गया। उसने जेम्स बॉन्ड के उपन्यासों में भी इस तरह के इन्तजाम के बारे में नहीं पढ़ा था। इस इन्तजाम में जहाँ पूर्ण सुरक्षा थी, वहीं जोखिम भी कम नहीं था। अगर प्रत्येक मीनू पर ऐसा लिखा हुआ है तो आम आदमी के तो नहीं, मगर इन्टैलीजैन्स के किसी भी आदमी के सामने यह मीनू पड़ जाने पर खतरा पैदा हो सकता है। खैर, उसने सोचा, उन्होंने इस खतरे के विरुद्ध भी कोई इन्तजाम जरूर किया होगा।

बैरा कॉफी ला रहा था। वह सतर्क हो गया। उसने देखा, गेट पर न पीछा करने वाला आदमी था, न ही वे पाँचों लड़के-लड़कियाँ। बैरे के आते ही वह खड़ा हो गया।

"कॉफी कैन्सिल," वह बुदबुदाया, "आई वान्ट टैन फैब्रोअरी।"

"पार्डन !" बैरे ने कहा।

बैरे के निर्विकार चेहरे को देखकर वह अचकचा गया। कहीं उससे गलती तो नहीं हो गयी है, भुवन ने सोचा। फिर पूरे आत्म-विश्वास के साथ मीनू के इक्कीसवें नम्बर पर उँगली टिका कर धीरे-धीरे कहा, "दस फरवरी।"

"ओह," बैरे ने मीनू देखा और बोला, "इक्कीसवें नम्बर पर तो 'शैम्पेन' है। गलती से तारीख टाईप हो गयी है शायद। मैं दूसरा मीनू लाता हूँ।'

'मुझे आशू ने भेजा है।" भुवन ने अन्तिम प्रयत्न किया।

इस वाक्य का असर हुआ। बैरे ने कॉफी की ट्रे उठायी और दायीं तरफ के गलियारे की ओर चलता हुआ बोला, "मेरे पीछे आइए।"

भुवन उसकी बगल में आ गया। वह खुश था कि उसने मोर्चा जीत लिया है। बैरे के साथ चलता हुआ वह सोच रहा था कि आशू ने इतने कठिन तरीके से मीटिंग में बुलाकर उसके धैर्य और उत्साह और ज्ञान की

परीक्षा ली है क्या ?

"मैं किशोर हूँ, किशोर बड्थ्वाल," वैरे ने कहा, "मैंने पहले आपको कभी नहीं देखा।"

"इस शहर के लिए मैं नया हूँ," उसने जवाब दिया, "मेरा नाम भी किशोर है, भुवन किशोर।"

"आपसे मिलकर खुशी हुई ।"

"मुझे शायद देर हो गयी है।"

"मामूली-सी। बस पहुँच रहे हैं।" वैरे अर्थात किशोर ने कहा और एक छोटे-से स्टोर रूम में प्रवेश कर गया। वहाँ अँधेरा था। किशोर ने कहीं, कोई स्विच ऑन किया और स्टोर में कमज़ोर रोशनी पसर गयी। शायद ज़ीरो वाट या कोई बल्ब जला था। भुवन आश्चर्यचकित रह गया। क्या इसी कमरे तक पहुँचने के लिए उसे एक लम्बा गलियारा, एक बड़ा कमरा और ज़ीने चढ़ने-उतरने पड़े थे। कमरे में टूटे हुए दो सोफ़ो, शराब की खाली बोतलों और कॉफ़ी के जग खाय डिब्बों के अलावा एक बहुत गंदी-सी दरी पड़ी हुई थी। वह कुछ पूछता, इससे पहले ही किशोर ने कोने में बनी एक अलमारी का दरवाज़ा खोला और उससे कहा, "नीचे उतर जाइये, मगर सम्भल कर, सीढ़ियाँ लम्बी है और अँधेरा भी है।

वह हिचकता हुआ अलमारी में घुसा ही था कि किशोर ने पीछे से दरवाज़ा बन्द कर दिया और कुछ ही क्षणों के बाद कमरे के दरवाज़े के बन्द होने की आवाज़ भी आ गयी। एक सैकेंड के लिए भुवन घबरा गया। कहीं वह फँस तो नहीं गया है, उसने सोचा और शंकित होकर धीरे धीरे सम्भल-सम्भल कर सीढ़ियाँ उतरने लगा। नीचे उतरते चले जाने के सिवा और कोई विकल्प भी तो नहीं था। स्वयं को बाबू देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों का नायक समझते हुए वह तंग और अँधेरे ज़ीने की रहस्यमयी सीढ़ियाँ उतरता रहा जो सम्भवत सीधे पाताल में ही जा रही थी। आखिर, नीचे की तरफ उसे उजाले का आभास हुआ। कुछ ही देर बाद वह सबसे अन्तिम सीढ़ी पर था। सीढ़ी के सामने एक तंग-सा गलियारा था जिसमें उसे जाना था, क्योंकि या तो वहाँ वह गलियारा था या फिर ऊपर ले जाने वाली सीढ़ियाँ। इस गलियारे के अन्त में तीन-चार भूखे शेर

अगर सिर पटकते घूम रहे हों तो उसे उन शेरों के जबड़ों में फँसना होगा क्योंकि इसके सिवा भी कोई विकल्प नहीं था। वह तेज कदमों से आगे बढ़ता रहा और अन्ततः गलियारा भी समाप्त हो गया। अब वह एक बन्द दरवाजे के सामने था। उसने बिना समय गँवाये दरवाजा तीन बार खटखटा दिया। कुछ क्षणों की खामोशी के बाद भीतर से पूछा गया, "कौन?"

"इस फरवरी।" उसने चीखकर जवाब दिया। उसका धैर्य चुक गया था और वह बौखलाया हुआ था।

दरवाजा खुलते ही तेज रोशनी उसकी आँखों पर पड़ी और वह ठिठक गया। अँधेरे में डूबी उसकी आँखें एकाएक इतनी तेज रोशनी सहन न कर पाने के कारण बन्द हो गयी थीं। उसने अनुभव किया कि दरवाजा खोलने वाले व्यक्ति ने उसे हाथ पकड़ कर अन्दर खींच लिया है और फिर से दरवाजा बन्द कर दिया है।

यह एक बहुत बड़ा हॉल था जो तेज रोशनी में जगमग-जगमग कर रहा था। पूरे हॉल में दरी के ऊपर करीब सौ-सवा सौ लड़के-लड़कियाँ चुप बैठे हुए थे और उनके सामने एक लम्बा-चौड़ा लड़का खड़ा हुआ था जिसके चेहरे पर घनी दाढ़ी थी और जिसने जीन की पैन्ट पर सफेद रंग की टी-शर्ट डाली हुई थी। लड़के की आँखें एक विचित्र-सी आग को लिये चमक रही थीं।

शायद यही वह ममगाँई है जिसके बारे में आशू ने उसे विस्तार से बताया था। वह अपनी अब तक की सारी झल्लाहट और बौखलाहट को दबा कर दरी पर बैठ गया। निःशब्द। संभवतः हॉल में ममगाँई का भाषण चल रहा था। जब हॉल की स्थिति पूर्ववत हो गयी तो ममगाँई ने कहना शुरू किया, "पर्वत पुत्रों की सहन-शक्ति और शान्तिप्रियता को सरकार बहादुर कायरता समझ रही है और सरकारी दमनचक्र की क्रमशः तेज होती गति इस बात का प्रमाण है कि उसने हमें कायर और कमजोर समझ लिया है। पिछले वर्ष उत्तराखंड की युवा शक्ति ने उत्तराखंड के शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध एकजुट होकर जो प्रतिरोध किया उस प्रतिरोध को कुचलने का घृणित और क्रूर षड्यंत्र आप सबने 'नैनीताल-

काड' के रूप मे देखा। पहाडी सम्पदा के लुटेरे और शोषक वडे-वडे धन्नासेठ जिन्हे एक तरफ सरकारी सरक्षण प्राप्त हैं और दूसरी तरफ आन्दोलन की सर्वोदयी वागडोर को खरीदे है अपनी लूट-मार को व्यापक और तेज करते जा रहे हैं और यही वात पहाड की शान्तिप्रिय और अबोध जनता के लिए भयानक तवाही के सामान ला रही है। नौजवान ताकत के लिए यह घटना दुखद और गभीर है । हमारे शान्त स्वभाव और छात्रो के सामने उपस्थित परीक्षाओं को देखकर सरकार मौके का फायदा उठाना चाहती है और छात्रो की परीक्षाओं को छात्रो की मजबूरी समझ कर और भी अधिक अमानवीय और खूँखार हो उठी है। परीक्षाओं की तैयारियो म जुटे छात्र-छात्राओं को उनके घरो से घसीट कर जिस प्रकार जेल के सीखचो के पीछे ठूँस दिया गया है उससे एक जबरदस्त तनाव का वातावरण पैदा हुआ है। सरकार का यह कदम नैनीताल काड की न्यायिक जाच की तेज माँग को दमन और षड्यन्त्र से खत्म करने का कदम है। अपने निर्दोष साथियो को रिहा करने के लिए हम पिछले दस दिनो से वरावर प्रशासन और सरकार से विनम्र अनुरोध करते आ रहे है और हमारा यह विनम्र अनुरोध लगातार वेरहमी से ठुकराया जा रहा है। अपने गिरफ्तार साथियो की रिहाई के समर्थन मे हलद्वानी के नौजवानो और जनता ने जो शान्तिपूर्ण जुलूस निकाला था उसे सरकार की दरिन्दी पुलिस ने निर्ममता से कुचल कर तानाशाह सरकार की जनतत्रीय नकाव को उतार फेंका है और यह सावित कर दिया है कि 'दूसरी आजादी' की अलम्बरदार यह सरकार जो आपातकाल के विरोध म वनी थी, यह भी तानाशाही-पसन्द ताकत है और आपातकाल इसके राज म भी कायम है, अघोषित आपातकाल। हलद्वानी के जुलूस का ववंर दमन उत्तराखड के आज तक के इतिहास का सबसे काला दिन है। इस काले दिन की याद तक थर्रा देने वाली है। इस जुलूस में मेरी सगी वहन भी थी जिसके साथ वीच जुलूस में गोलियो की आवाजो के वीच वलात्कार किया गया, वीभत्स वलात्कार। पचासो लडकियो के कपडे फाड दिये गये, सैकडो लडको के घुटने तोड दिये गये और सरकारी कर्मचारियो, वकीलो, दुकानदारो तथा राह चलते नागरिको को जिस वहशियाना तरीके से पीटा और घसीटा

गया और अन्त में तीन सौ सात लोगों को 'फर्स्ट एड' दिये बिना गाजर-मूली की तरह एक ही ट्रक में ठूंस कर बरेली, टिहरी और नैनीताल की जेलों में भेज दिया गया—यह सब सरकार बहादुर के नग्न दमन की क्रूरतम अभिव्यक्ति है। क्रूरतम और घिनौनी। ये तमाम घटनाएँ सिद्ध करती हैं कि सरकार चाहे किसी की भी हो, जब तक धन्ना सेठों की तिजोरियाँ नेस्तनाबूद नहीं कर दी जातीं तब तक दमन जारी रहेगा। हम सरकार बहादुर को यह बता देना चाहते हैं कि हम कायर नहीं हैं। लूट और आतंक का ये राज जब तक चलेगा तभी तक संघर्ष भी चलेगा। संघर्ष शान्तिपूर्ण होगा लेकिन अब अगर कहीं सरकारी हिंसा हुई तो जवाब क्रांतिकारी प्रतिहिंसा से दिया जायेगा। सरकारी फौज और मशीनगनों का भय सर्वोदयी चूहों को हो सकता है मेहनतकश जनता को नहीं, क्रांतिकारी जनता को नहीं। सरकार के नंगे दमन और धन्ना सेठों की खुली लूट की निन्दा करते हुए हम चौबीस फरवरी को 'उत्तराखंड बन्द' की घोषणा करते हैं। 'उत्तराखंड बन्द' के समर्थन में हम परसों नैनीताल में एक बड़ा जुलूस निकालेंगे। यहाँ मौजूद सभी कार्यकर्त्ता कुमाऊँ और गढ़वाल के चप्पे-चप्पे में जाकर 'संपूर्ण उत्तराखंड बन्द की तैयारी करेंगे और नैनीताल के परसों वाले जुलूस का नेतृत्व यहाँ बैठे केवल पाँच साथियों के कंधों पर होगा और इस जुलूस में मैं भी चलूँगा।"

जैसे हॉल में बिजली गिर पड़ी हो। शोर मच गया। 'नहीं, नहीं' की आवाजों से हॉल गूँजने लगा। भुवन हतप्रभ रह गया। सोचने-समझने की सारी शक्ति जैसे अपंग हो गयी हो। यही है उत्तराखंड का लोकप्रिय भूमिगत नेता, एच० सी० ममगाँई, जिसकी गिरफ्तारी के लिए सरकारी अधिकारी घायल शेरनी की तरह व्यग्र और आक्रामक हैं। और यह जुलूस में चलेगा? अचरज! घनघोर अचरज!! भुवन विशोर की लेखकीय समझ उसका साथ छोड़ गयी। ऐसे कैसा होता है कि कुछ लोग डर-डर कर तमाम उम्र काट देते हैं! नौकरी छूटने का डर, जेल का डर, पिटाई का डर, भूखे मरने का डर, प्रेम-भंग का डर, मोह-भंग का डर और अन्त में मर जाने का डर और फिर भी ये सारे डरे हुए लोग उन्हीं हादसों का शिकार होते हैं जिनसे वे डरते हैं। दूसरी तरफ कुछ लोग हैं जो डर को

डराये रखते हैं और पहली तरह के ढेर मारे डरे हुए लोगों की मुक्ति के लिए सघर्षरत रहते हैं। बेटा भुवन किशोर, महान विवादास्पद लेखक, तुम्हारी यह तर्क-शक्ति कहाँ चली गयी जिसके बल पर तुम तमाम दिग्गजों के सामने यह सिद्ध करते हुए घूमा करते थे कि पूरी दुनिया का संघर्ष अन्तत औरत के डेढ इंची चमडे पर आकर स्थगित होता है? ये जो पहाडों म इन दीवाने छोकरों और गुस्सैल जनता के संघर्ष में तुम चक्कर-घिन्नी को हुए हो, इसमें कहाँ है औरत की वह अँधेरी गुफा जिसमें तुम्हारे तथाकथित साहित्य की जवानी बंद है? कहाँ है तुम्हारे 'काउटर वर्ल्ड' का प्रतिनायक जो हर वाममार्गी के तने हुए उरोजों के बीच अपने कुंठित-प्रसंगों को व्याख्यायित-स्थापित करता है? यहाँ तो जो नायक हैं उनके पीछे तुम्हारी व्यवस्था के जरखरीद पहरेदार नुकीले बल्लम लेकर भाग रहे हैं और जो वाममार्गी है उनके गुप्तांग में संगीनें भोंक देने का दानवी रिहर्सल चल रहा है। बेटा भुवन किशोर, अपने प्रशंसक पाठकों-लेखकों को बुलाओ और उनसे कहो कि लडती हुई इस जनता के सामने आकर जरा लौंडिया की बेवफाई, सैक्स की कुंठा और शराब में डूबे हुए बदहवास अफसाने पेश करें तो पता चले कि अकेलेपन और मृत्यु-दर्शन के मसीहा कुछ दम-खम रखते हैं। तुम्हारे ऐसे मसीहाओं की चिन्ता और कष्ट और तकलीफ को सुनकर यह लडती हुई जनता मार-मार कर चूतड न तोड दे तब कहना। जरा अपने अन्तर्मन में पूछो कि तुमने जो अभी तक महान साहित्य रचा है उसका मकसद क्या है आखिर? थुलथुल शरीर वाले नामर्द धनकुबेरों को जिस तरह 'ब्लू फिल्म' मजा देती हैं, उसी तरह क्या तुम्हारा साहित्य भी पेट-भरे, ऊबे हुए नाकारा लोगों की विकृत मानसिकता को तृप्त नहीं करता? अगर लूट का यह साम्राज्य पलट गया तो जगह-जगह लडती हुई यह आवाज और गुस्सैल जनता तुम और तुम्हारे भ्रष्ट साहित्य को भी नष्ट करने से बाज नहीं आयेगी। जनता का यह गुस्सा बहुत गहरा है और जैसे-जैसे यह और गहरा होता जायेगा वैसे वैसे ही अपने विरुद्ध खडी-बनी हर चीज—धर्म, समाज, संस्कृति, साहित्य और व्यवस्था के प्रति उसकी नफरत भी बढती जायेगी और नफरत का यह हरहराता हुआ ज्वालामुखी जब फटेगा तो भयानक

विध्वंस करेगा। नया मकान पुराने मकान को तोड़कर ही बनाया जाता है, यह तुम जानते हो।

अचानक भुवन किशोर चौंक पड़ा। आशू और ममगांई उसके सामने आकर बैठ गए थे। वह थोड़ा असहज हो उठा।

"बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर," ममगांई कह रहा था "दुख है कि मैंने आपकी किताबें नहीं पढ़ीं, लेकिन हलद्वानी कांड पर आपका लिखा हुआ रिपोर्ताज मैंने पढ़ा है। बहुत फोर्स है आपकी कलम में।" ममगांई ने तारीफ की और भुवन को लगा, वह मजाक कर रहा है। वह आहिस्ता से मुसकराया और बोला 'अच्छा है कि मेरे लेखन से आपका पहला परिचय रिपोर्ताज वाला है वरना तो प्रतिक्रियावादी साहित्य ही लिखा है आज तक।"

उसके इस जुमले पर आशू मुसकराया और ममगांई ठठाकर हँस पड़ा। देर तक हँसते रहने के बाद उसने गंभीरता से कहा "अगर नीयत प्रतिक्रियावादी नहीं है तो जनता अपने साथ ले ही लेगी। हकीकतें दिमागी कुहासे का खुद ब खुद खत्म कर देती है।"

"सो तो है।" भुवन ने कहा और खड़े होते हुए ममगांई से हाथ मिला लिया। हाथ मिलाने के बाद ममगांई ने दरवाजा खोला और हवा की तरह अदृश्य हो गया। भुवन ने देखा इस समय तक हॉल में कुछ ही लोग बचे थे। वह भी आशू के साथ बाहर निकल आया।

अबकी बार वे एक दूसरे रास्ते से जा रहे थे और भुवन इस तिलिस्म को देख अचरज के मारे मरा जा रहा था।

जया चौधरी अपने कमरे में आराम कुर्सी पर पड़ी छत को देखे जा रही थी और मिस्टर चौधरी अपने कमरे में बेचैनी के साथ चक्कर लगा रहे थे। लगातार। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्रांति करने का जो जुनून उनकी बेटी के दिलो दिमाग पर बेतरह छाया हुआ है वह दूर कैसे होगा? नवेन्दु घोष से टकराकर पराजित हो जाने के अपने अनुभव से वे जानते थे कि अगर आदमी के दिमाग में घुसे हुए जुनून की जड़ें विचार-

धारा की जमीन में जुड़ी हैं तो उस जुनून का कोई निदान नहीं है। विचार से जुड़ा आदमी प्रतिरोध न करे, यह समव ही नहीं है। और इसी असभव के परिणाम ने मिस्टर चौधरी को बेचैन कर दिया था। अपनी स्वय की बेटी से हुए सवाद और सवादों के परिणामस्वरूप उनके साथ अपने द्वन्द्व-पूर्ण सम्बन्धों के सूत्रपात के स्पष्ट सकेत ने मिस्टर चौधरी को आघात कर दिया था।

'फर्स्ट एड' वगैरह दिलाकर मिस्टर चौधरी जया को चुपचाप घर ले आये थे और प्राइवेट डॉक्टर्स की सहायता लेते रहे थे। उन्होंने सोचा था कि पूर्ण स्वस्थ होने के बाद जया को अपराध-बोध होगा और वह उनसे क्षमा माँग लेगी। मगर ऐसा नहीं हुआ था। जया ने अपने चेहरे को तान कर और शब्दों पर ज़ोर देकर कहा था, "मुझे घर ले आने का वक्त निकल गया है पापा, और ऐसा करने से आपको कोई लाभ भी नहीं होगा क्योंकि मुझे जब भी मौका मिलेगा, मैं यहाँ से चली जाऊँगी। आई० ए० एस० के बाद मैं किसी रोज़ किसी शहर की डी० एम० बनकर आपको सुख दूँगी, यह कल्पना ही घटिया है। समझ लीजिये कि मैं माँ के साथ ही मर गयी थी।"

"मगर क्यों ?" मिस्टर चौधरी आहत हो गये थे।

"क्योंकि मैं आपके बदन पर चढ़ी इस वर्दी से नफरत करती हूँ।" जया का स्वर इतना निर्द्वन्द्व और इतना ठडा था कि मिस्टर चौधरी की रीढ़ की हड्डी में एक सरसराहट-सी दौड़ गयी।

"तुम ?" वे इतना ही कह सके और हाँफने लगे।

"हाँ, मैं," जया ने शान्त, गभीर और निरुद्वेग आवाज़ में कहा, "मैं आपके मालिकों से नफरत करती हूँ जिन्होंने यह वर्दी पहनाकर आपके विवेक को खरीद लिया है। आपके मालिक गोलियों से भून देने के काबिल हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी तिजोरियों की रक्षा के लिए मजबूर और नेकदिल इसानों को सवेदन-शून्य बनाकर उनके हाथों में बन्दूक और मशीनगनें पकड़ाकर और पुलिस की यह खाकी वर्दी पहना कर अपने ही बेटे-बेटियों और भाई-बहनों के खिलाफ खड़ा कर दिया है। मुझे क्षमा करें पापा, मैं निहत्थों पर गोलियाँ दागने का आदेश देने वाले मालिकों और उनके गुलाम

एस० पी० चौधरी से नफरत करती हूँ—अटूट और असीम नफरत।"

थर-थर काँपते मिस्टर चौधरी ने अपनी बेटी जया के शब्दों को भ्रम मानना चाहा था, पर वह भ्रम नही भ्रम भग था। उनके अपने घर मे इतने बडे अपराध ने मुँह उठाया था और वे अपराधियो की धर पकड बाहर कर रहे थे। उनकी आँखो के सामने सात महीने पहले वाली जया घूम गयी जो मचलते हुए पूछ रही थी 'पापा प्लीज, बताइये न आपने नक्सलवादियो को देखा है?'

मिस्टर चौधरी को लगा कि उन्होने नक्सलवादी को सिर्फ देखा था और मार दिया था मगर जया ने तो नक्सलियो को जान लिया है। नक्सलवादियो को जान लेने की जया की यह समझ ही उनकी बेचैनी का मूल कारण थी। जया के बागी हो जाने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी क्या स्वय उन्ही पर ही नही जाती है जो पिछले सात महीनो मे एस० पी० चौधरी बनकर ड्यूटी निभाते रहे बाप का कर्त्तव्य ही भूल गये? खासकर ऐसी लडकी के बाप का फर्ज भूल गये जिसके सिर पर माँ भी नही है।

वर्दी पर झूलते सारे तमगो को नकारते हुए सहसा ही एक भावुक याद मिस्टर चौधरी की चेतना मे चली आयी। उनकी पत्नी की याद। तब जया केवल छह वर्ष की थी जब किडनी ऑपरेशन के दौरान उनकी पत्नी का देहान्त हो गया था। पत्नी के मरते ही मिस्टर चौधरी के लहू-लहाने मन पर जैसे पाला पड गया। वे अपनी पत्नी से बेपनाह मुहब्बत करते थे। माँ-बाप के विरोध को झेलकर उन्होने कोर्ट-मैरिज की थी। सारे सरकारी दमन-चक्र के बीच मे अचकचाकर कभी-कभी जो मानवीयता उनके दिमाग मे हलचल मचा देती है उसका एक मात्र कारण उनका अपनी पत्नी के साथ गुजरा आठ-वर्षीय समय ही है। उनकी पत्नी जब तक जीवित रही उनके सरकारी कारनामो से टकराती रही।

'अगर कोई भूखा दुकान से डबल रोटी चुरा कर भाग जाय तो आप उसे पकडकर जेल मे ठूँस देंगे?' वे कहा करती थी, 'फिर तो उन लोगो को फाँसी दीजिये जो भूख के जिम्मेदार हैं। हमारे शहर का एक एम० एल० ए० औरतो का व्यापारी है। वह जौनसार बावर जैसे पिछडे इलाके से सौ-सौ रुपये मे लडकियाँ खरीद कर लाता है और दिल्ली

बम्बई, कलकत्ता के बाजारों में पच्चीस गुना अधिक दामों पर बेच देना है। उस एम० एल० ए० को बन्द कर सकते हैं आप ?'

'यह मेरा काम नहीं है।' मिस्टर चौधरी सुरक्षा के कोने तलाश करने लगते थे।

'आपका क्या काम है, बताएँगे ? हड़ताल कर रहे मजदूरों को लाठियों से पीटकर मार देना आपका काम है ! छात्रों के जुलूस पर फायर करवाना आपका काम है ! पति की हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराने आयी *किसी गरीब औरत को थाने में रेप कर देना आपका काम है !"*

'लैंग्वेज प्लीज, माया। लैंग्वेज प्लीज।' मिस्टर चौधरी अपना सिर थाम लेते थे और अपनी पत्नी की सरकार-विरोधी मानसिकता से भय-भीत हो उठते थे।

'हैवानी हरकतों के सचालक को आइने से इतनी बौखलाहट क्यों ?'

"अपने वर्ग से जुड़ो माया, अब तुम एक एस० पी० की बीवी हो, प्राइमरी स्कूल के अध्यापक की बेटी नहीं।' मिस्टर चौधरी न चाहते हुए भी पैना वार करते। लेकिन उनकी पत्नी वार के पैनेपन को भोथरा बनाते हुए पलट कर जवाब देती, 'मैं अपने वर्ग से ही जुड़ी हूँ मगर तुम जरूर अपने वर्ग से अलग हो गये हो।'

'तुम्हें तो यार किसी रिवोल्यूशनरी का हाथ थामना चाहिए था। तुम मेरे पल्ले क्यों पड़ गयीं ?'

रिवोल्यूशनरी तो रिवोल्यूशनरी होता ही है, उसका हाथ पकड़ने से क्या लाभ होता ? लाभ तो तुम्हारे साथ ही है, क्योंकि एक दिन तुम्हें क्रांतिकारियों के पक्ष में खड़ा करना है।'

'यह तो मुमकिन ही नहीं है, डार्लिंग।' मिस्टर चौधरी ठठाकर हँस पड़ते।

'इस नामुमकिन को अगर मैं मुमकिन न बना सकी तो मेरी बेटी बनायेगी,' *माया चौधरी अपना विश्वास से मजबूत हाथ बेटी के सिर पर* फिराते हुए जवाब देतीं और सवाल करती, "अच्छा मान लो, मैं न रहूँ और जया बड़ी होकर क्रांतिकारी बन जाये तो तुम क्या करोगे ? क्या *अपनी बेटी को भी गोली मार दोगे ?"*

'क्या पागलपन की बातें करती हो ? न तुम मरोगी और न ही हमारी बेटी अपने बाप के विरुद्ध खड़ी होगी। तुम देखना माया, हमारी बेटी कम से कम डी० एम० तो बनेगी ही।' मिस्टर चौधरी कहते और मन में कहीं दूर तक डरते चले जाते कि अगर माया का सपना सच हो गया तो वे क्या निर्णय लेंगे ?

आज माया नहीं है और जया उनके विरुद्ध खड़ी हो गयी है। वे बाप बनकर निर्णय लें या एस० पी० बनकर ? मिस्टर चौधरी की चेतना में भ्रम उभरने लगे। ऐसे अनिर्णय की स्थिति में उन्हें अपनी पत्नी की याद बेतरह आयी और वे थके-थके-से सोफे पर गिर पड़े।

अपने ऊपर उन्हें काफी क्रोध आ रहा था। वक्त निकल जाने पे याद वे चिन्ता करने बैठे हैं। उन्हें ताज्जुब हुआ कि वे इतन लापरवाह कैसे रहे कि एक बार भी जया के कमरे में जाकर नहीं देख सके कि मार्क्सवादी साहित्य का इतना विशाल भंडार वहाँ कैसे पहुँच गया है और क्यों ? यह ठीक है, कि पत्नी की अकाल मौत का गम उन्हें तोड न दे, इस भय से व शराब के बजाय काम के नशे में डूब गये, लेकिन गलती यह हो गयी कि इस नशे में डूबे रहकर वे यह भी भूल गये कि जया जवान होती जा रही है और खुद निर्णय ले सकने की दिशा में तेजी से बढ़ रही है। गलती यही हो गयी और यही हो गयी। मिस्टर चौधरी ने सोचा और दहशत से अँधेरे में घिर गये। एक विस्फोट की प्रतीक्षा करते रहने के अलावा अब वे कर भी क्या सकते हैं ? उन्होंने सोचा और फिर से उठकर टहलने लगे। क्या एक मजबूर और आहत बाप की तरह वे जया के पास जाकर गिड-गिड़ायें अथवा एक तानाशाह अफसर की तरह मार-मार कर उसका सारा विद्रोह झाड़ दें ? लेकिन तानाशाह अफसर को नवेन्दु घोष ने जितने दुखद और अपमानजनक ढंग से पराजित कर दिया था, क्या इस बात को वे भूल जायेंगे ? तो ? उन्होंने थककर सोचा और थकी-थकी स्थिति में ही जया के कमरे में घुस गये। वे जया से ही पूछेंगे कि वे क्या करें ? वे कौन-सी शर्तें हैं जिन्हें पूरा कर देने से जया वापस लौट आये ?

कमरे में घुसते ही उनके दिमाग में आतिशबाजी छूटने लगी। जया की पीठ पर हैवरसैक टँगा हुआ था और वह जा रही थी। सचमुच।

' मैं जा रही हूँ ।" जया ने कहा और पिता को देखा ।

मिस्टर चौधरी की चेतना सुन्न पड़ गयी। उन्होंने सहारे के लिए दीवार का पकड़ लिया। वे जया को रोकना चाहते थे, मगर अधिकारी के नाते नहीं। आखिर, जया के जाने के बाद वे नौकरी क्यों करेंगे और किसके लिए? वे जया को सामने बिठाकर एक नेक बाप की तरह बहुत-बहुत बातें करना चाहते थे, मगर इतना ही कह सके, "इस देश में तुम्हारे ये कदम एक धेले से ज्यादा अहमियत नहीं रखते, बेटे! मरे हुए और थके हुए लोगों के इस मुल्क में तुम्हारा रास्ता नारेबाजी से शुरू होकर जेल की कोठरियों में समाप्त हो जायेगा। मेरी बात मान जाओ, ये मुर्दा लोग क्रांति नहीं कर सकते, ये सिर्फ क्रांतिकारियों की तबाही का तमाशा देख सकते हैं।" मिस्टर चौधरी की आवाज काँपने लगी थी और जिन्दगी में पहली बार उनके चेहरे पर बुढ़ापे की निर्बल और असहाय रेखाएँ खिंच आयी थीं।

एक पल के लिए जया चौधरी डगमगा गयी, लेकिन सिर्फ एक पल के लिए। उसने पिता की आँखों में झाँककर कहा, "अगर मैं कहूँ कि जनता का खून चूसने वालों की कतार में से आप बाहर निकल आयें क्रांति पाँच या सात या दस साल का सच न हो, मगर चालीस या पचास या सौ बरस बाद का सच जरूर है तब?"

मिस्टर चौधरी को नहीं सूझा कि वे क्या जवाब दें? तर्कों की तंग दीवारों से टकराना उन्हें कभी नहीं आया। वे चुप पड़ गये, कोई भी जवाब नहीं दे सके और उन्होंने अपने मलीन चेहरे तथा सिकुड़ती हुई आँखों की थकान, और डूबते हुए दिल के दर्द को एक साथ अनुभव करते हुए देखा कि जया उनके सामने से निकलती हुई बाहर चली गयी। वे देखते ही रहे। केवल। असहाय, लाचार, बेबस। गेट पर खड़े जया के अंगरक्षकों को वे कैसे कह दें फायर! और अंगरक्षक भी बिना आदेश के कार्रवाई करें तो कैसे?

एम० पी० चौधरी के स्नायुओं में झिनझिनाहट होने लगी और उनकी

हथेलियाँ पसीज गयी। जिस क्षेत्र में धारा एक सौ चवालिस लागू हो गयी थी उस क्षेत्र की सीमा-रेखा के सामने वे अपनी जीप में खड़े हुए थे और मल्लीताल से आते उस विशाल जुलूस को देख रहे थे जिसने धारा एक सौ चवालिस तोड़कर प्रतिबन्धित क्षेत्र से गुजरते हुए डी० एम० की अदालत में पहुँचने की घोषणा, समूचे गढ़वाल और कुमाऊँ के इलाकों में, बड़े-बड़े पोस्टरों, परचों और समाचारों के माध्यम से प्रसारित की थी। यह जुलूस 'आतंक तोड़ो दिवस' और चौबीस फरवरी को सम्पूर्ण उत्तराखंड बन्द' के समर्थन में निकाला जा रहा था और इसमें गढ़वाल और कुमाऊँ के सभी शहरों के नुमाइन्दे भाग लेने पहुँचे थे।

पुलिस हैडक्वार्टर में एस० पी० चौधरी को सूचना मिली थी कि जुलूस में आन्दोलन के तीन-चार कुख्यात और फरार नेता तक शामिल होंगे। उन कुख्यात नेताओं का नाम सुनते ही एस० पी० चौधरी की छठी इन्द्रिय ने एक खतरनाक आशंका को भाँप लिया था और वे सहसा ही पसीने और उत्तेजना से लथपथ हो गये थे। प्रशासनिक स्तर पर बात चिन्ताजनक थी भी। यह हवा लगते ही कि जुलूस की अगुवाई कौन-कौन लोग कर रहे हैं, पुलिस हैडक्वार्टर में मौजूद तमाम पुलिस ऑफिसर्स के चेहरों का रंग उड़ गया था। बहुत देर तक डी० एस० पी० खन्ना का मुँह अचरज में खुला रहा था। एस० एच० ओ० थपलियाल और इन्सपेक्टर रामसिंह बिष्ट बौखला कर खड़े हो गये थे। दो सब-इन्सपेक्टर बार-बार अपने हलक को थूक से तर करने लगे थे और हैडक्वार्टर में मौजूद सभी छोटे-मोटे पुलिस अफसर और सिपाही अपने भीतर एक असभव आतंक की थरथराहट महसूस करने लगे थे।

एस० पी० चौधरी ने इशारा किया और ड्राइवर उनकी जीप को जुलूस की दिशा में ले चला। जीप चलने के बाद भी एस० पी० चौधरी खड़े ही रहे और लगातार नजदीक आते जुलूस को गंभीरता से ताकते रहे। निकट पहुँचकर जीप रुक गयी। फौजी कवायद की तरह, ऐंठ कर आगे बढ़ते अनुशासित जुलूस को देखकर उनके दिमाग में सनसनी-सी दौड़ने लगी। जुलूस में सबसे आगे जनवादी कला-साहित्य मोर्चे की अध्यक्ष रजनी उनियाल हाथ में छोटा-सा पोस्टर लिये खड़ी थी, जिस पर लाल

रंग से लिखा था, 'पुलिस हमारी भाई है, उससे नहीं लड़ाई है।' पन्तनगर के एक मज़दूर-नेता की इकलौती लड़की रजनी उनियाल के नाम पिछले छह महीने से गिरफ़्तारी का वारंट जारी था / जारी है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार खतरनाक क्रांतिकारी। उसके ठीक बगल में पन्तनगर विश्वविद्यालय छात्र संघ का महासचिव तारा दत्त बडोला सीना तान कर खड़ा था और हुड़का (एक पहाड़ी तबला) बजा रहा था। बेख़ौफ़। बेझिझक। डेढ़ साल से भूमिगत, वामपंथी छात्र-नेता। उन दोनों के पीछे किसी महाराजा की तरह अकड़ कर चलने वाले आदमी का नाम था—एच० सी० ममगाईं। नरेन्द्रनगर कांड, अल्मोड़ा कांड, टिहरी कांड, नैनीताल कांड और देहरादून गोलीकांड का अभियुक्त, देश के सबसे बड़े और ज़ालिम नक्सली लीडर का विश्वासपात्र साथी, दो सब इंस्पेक्टर्स और पाँच सिपाहियों को शूट कर देने वाला, दो बार देहरादून और एक बार बरेली की जेल से फ़रार हो जाने वाला एच० सी० ममगाईं पहाड़ का बच्चा-बच्चा जिसे जानता है। गढ़वाल और कुमाऊँ की हर जेल में जिसके गुमनाम चहेते, सरकारी मुलाज़िम, मौजूद हैं। जिसे रामनगर के बस-अड्डे पर गश्त लगाते दस सिपाहियों ने देखा, मगर गिरफ़्तार करने के बजाय भागकर कोतवाली आ गये, सूचना देने। पहाड़ों में एक कहावत है कि जो आदमी ममगाईं को नहीं जानता उसे पहाड़ी कहलाने का हक़ नहीं है। और उसी ममगाईं के बगल में एस० पी० चौधरी ने अपनी बेटी जया चौधरी को देखा जिसके हाथ में एक बड़ा-सा पोस्टर ऊँचाई पर चमक रहा था—"पर्वत-पुत्रों को कायर समझने वाली सरकार, होश में आओ! पहाड़ के लुटेरों, होश में आओ।"

पर्वत-पुत्रों का साथ देने वाली अपनी गैर-पर्वतीय लड़की की हरकत एस० पी० चौधरी की समझ से परे थी। वे सिर्फ़ हैरान थे और परेशान थे कि ममगाईं, रजनी उनियाल और तारादत्त बडोला को कैसे गिरफ़्तार करें? एस० पी० चौधरी की परेशानी और पुलिस-फ़ोर्स के आतंक से निरपेक्ष यह जुलूस हुड़के की ताल पर लयबद्ध स्वर में गाता हुआ लगातार आगे बढ़ रहा था— "आज हिमाल तुमन कैं धत्यूंछ, जागो-जागो ओ मेरा लाल . नी करि दी हालो हमरी निलामी नी करि दी हालो हमरो

अनुभव था जो अपने नयेपन, खुलेपन और व्यापकता के कारण उसे न सिर्फ आश्चर्यचकित किये हुए था, बल्कि भाव-विभोर भी किये हुए था। वह आशू के मना करने के बावजूद यहाँ आया था। हल्द्वानी वाले काड के बाद से पुलिस की दृष्टि उसके ऊपर भी पड गयी थी, मगर उसने परवाह नही की थी और आशू के सामने यह तर्क पेश किया था कि जब ममताई और रजनी और वडाला जैसे खतरनाक लोग जुलूस मे जा रहे है तो वही क्यो सुरक्षा के कोने मे खडा रहे ?

उसने आज तक नही जाना था कि पुलिस, मिलिटरी, जेल, फाँसी, गोली और गुडा कातिलो की पनाह मे साँस लेती इतनी विशाल और इतनी क्रूर और इतनी अजेय व्यवस्था को भी इस तरह सीना तान कर चुनौती दी जा सकती है। सगर्व और भयमुक्त। इतने अधिक भयमुक्त लोगो के निरन्तर सम्पर्क मे रहने के कारण वह स्वय भी मुक्त हो रहा था। भय से, गलाजत से, कुठा से निराशा से, हताशा से, और मृत्यु से। यह उसकी पूर्ण मुक्ति का समय था। समय जो केवल शब्द नही, अर्थ था। मुक्ति का अर्थ प्रसारित करने वाला शब्द। समय। वह समय के इस अर्थ के आगे नतमस्तक था आभारी था और गद्गद था।

तभी उसे अपनी बाँह पर एक कसाव महसूस हुआ। उसने पलट कर देखा और रोकते-रोकते भी उसकी चीख निकल गयी। वह सगीता बैनर्जी थी।

वह अवाक रह गया। उसने अपने सिर को ज़ोर से झटका दिया, जाँघ पर चिकोटी काटी, होठो को दाँतो से कुचल दिया और दर्द से चीख पडा। सचमुच, वह सगीता बैनर्जी ही थी। सगीता ने उसकी बाँह को कसकर पकड लिया था और उसे पीछे की तरफ घसीट रही थी। उसने प्रतिवाद करना चाहा, मगर नही कर सका। उसकी जबान ऐंठ चुकी थी, आँखें पथरा गयी थी और दिमाग सज्ञाशून्य हो गया था। उसका जिस्म पूर्णत और यत्रावत शिथिला गया था। वह उसी दशा मे उसी दिशा की तरफ घिसटता चला गया जिस तरफ सगीता उसे घसीटे ले जा रही थी।

वे जुलूस का बहुत-बहुत पीछे छोड आये थे। जुलूस को पीछे छोडने मे उन्हे तकरीबन पौन घटा लगा था और इस पौन घटे के दौरान दोनो

के बीच एक भयानक चुप्पी अपना सिर पटकती रही थी। अब वे झील के अन्तिम छोर पर थे, मगर सगीता उस तब भी घसीटे चल रही थी और वह घिसट रहा था, जैसे नगरपालिका के कर्मचारियों ने किसी आवारा कुत्ते को गोली मार दी हो और नगरपालिका की गाडी मे फिंकने के लिए घिसटता हुआ जा रहा हो, मृत। आखिर सगीता ने उस एक पहाडी के एकान्त म ले जाकर पटक दिया और हाँफने लगी।

पूरे आठ महीने से मैं तुम्हे पागलो की तरह ढूँढती फिर रही हूँ,' सगीता न हाँफ हाँफ कर ही कहा 'कलकत्ता दिल्ली, लखनऊ, मेरठ, आगरा, शिमला, देहरादून, मसूरी और अब नैनीताल। मैं हर शहर मे तब-तब पहुँची जब जब तुम वह शहर छोड चुके होते थे।" सगीता अभी भी हाँफ रही थी। तेज साँसो से उसका उभरा हुआ वक्ष ऊपर-नीचे हो रहा था और उसके गोरे तथा भरे हुए गाल उत्तेजना और थकन और आवेश स रक्तिम हो उठे थे।

वह सुनता रहा और देखता रहा। वह देखता रहा और सुनता रहा। उसके भीतर न जाने कब क्या, क्या-क्या उमड घुमड करता रहा। उसकी अवाक आँखो म रफ्त-रफ्त लालिमा उभरने लगी। उसके होठ और हाथ और माथे की नसे फडकने लगी। वह काफी देर तक सुनता रहा। केवल। उसने लगातार सुना और जाना कि उससे अलग होकर सगीता ने किस तरह 'रिएक्ट' होकर एक सोने के व्यापारी से शादी की और फिर भुवन की बेपनाह याद ने किस तरह उसकी रातो को छीन लिया, किस तरह उसने सोने के व्यापारी अपने पति स तलाक लिया और किस तरह वह भुवन की खोज म सारा मुल्क खूँदती रही, किस तरह उसने भुवन की जानकारियाँ हासिल की, पत्रिकाओ के दफ्तरों की सीढियाँ उतरी-चढ़ी, फक्कावजी की फब्तियाँ सुनी, नैनीताल पहुँची और किस तरह इस जुलूस म पूरे डेढ घटे से वह एक एक चेहरे पर अपना भुवन खोजती रही है, किस तरह भुवन को छोडकर भाग जाने की ग्लानि ने उसकी आत्मा को एक गहरे, अन्धे दलदल म फेंक दिया है।

उसने सब-कुछ सुना और जाना और देखा। अपनी कल्पना म उसन सगीता क गुज़रे वक्त को देखा और चुपचाप उसका बोलना, बताना और

तडपना देखता-सुनता रहा। उसके दिमाग म एक तीखा कोलाहल अपने फन पटक रहा था और इस कोलाहल से उसके दिमाग की एक-एक नस चटखी जा रही थी। उसका अतीत, उसका दुख, उसकी भटकन, उसकी आवारगी, उसकी बरबादी, उसकी चाहतें, उसकी निराशाएँ और उसके सपने—सब-कुछ अपने हाथ मे नुकीले बरछे उठाये उसको जगह-जगह से लहूलुहान कर रहे थे। लगातार। वह तकलीफ के इतने सामूहिक और घने और असहनीय दर्द को सहता हुआ निस्पद पडा था। निस्पद और निर्विकार।

"मैं मैं तुम्हारे बगैर नही रह सकती, भुवन," सगीता रोने लगी, "तुम जैसे भी हो, जो भी हो, मुझे स्वीकार हो, प्लीज ।" सगीता ने अपना अँसुआया चेहरा उसके कन्धे पर टिका दिया।

उसने सगीता के बालो को पकडा, उसका चेहरा ऊपर उठाया और अपनी पूरी ताकत लगाकर उसके गाल पर रैपट मार दिया। एक, दो, तीन, चार, पाँच, सात, दस । वह होश खो बैठा था और सगीता को पीटे जा रहा था। लगातार।

सगीता पिटती रही। उसने प्रतिवाद नही किया। वह हँसने लगी। हँसते-हँसते ही वह बोली, "मैं तरस गयी थी भुवन, और मारो, मैं तुम्हारे स्पर्श के लिए पागल हो गयी थी, मारो मुझे सुख मिल रहा है।" सगीता ने हँसते-हँसते ही कहा और रोने लगी।

वह रुक गया। वह थक गया था। उसका विवेक लौट आया था और आवेश थक कर गिर पडा था। उसने सगीता को धक्का देकर एक तरफ ठेल दिया और खुद पहाडी पर बैठकर तेज आवाज मे हाँफने लगा।

"तुम क्यो मेरा पीछा कर रही हो ? तुमने मेरी जिन्दगी को तबाह करने की सौगन्ध खायी हुई है क्या? तुम मुझे मुक्त क्यो नही होने देती ?" भुवन ने चीख कर और लगभग रोते हुए कहा, "मैं फिर से उस गुहाधकार मे नही जाना चाहता जहाँ आहो और कराहो के विषधर बिलबिला रहे है।"

"पर मैं तुमसे अलग होकर जी नही पायी भुवन, मुझे अपना लो।" सगीता दौडकर उसके पास आ बैठी।

"नहीं, अब नहीं।" भुवन ने दृढ़ता से कहा और उठ खड़ा हुआ। उसने एक भरपूर नजर संगीता पर डाली और धीरे से बोला, "वह समय और था जब मैं तुम्हें अपनाना चाहता था, स्वयं को तुम्हें सौंपना चाहता था और तुम मुझे अपनाते-अपनाते भी छोड़ गयी थीं, यह समय और है।"

"समय एक शब्द भर है भुवन, सब-कुछ वैसा ही तो है इतनी जल्दी भला क्या बदलता है? यह तो सिर्फ एक 'गैप' था जिसने हमारे प्रेम को नयी ऊँचाई दी है।"

"नहीं, समय एक शब्द भर नहीं है," भुवन ने मुँह घुमा लिया, और न ही यह एक 'गैप' भर था। तुम्हें नहीं पता, इस बीच सब-कुछ बदल गया है। सोचने, रहने और जीने का तरीका बदल गया है इस बीच और इस बीच मैं ऐसी जगह जा पहुँचा हूँ, जहाँ से वापस लौटने की कल्पना तक मुझे मुर्दा कर देगी। मैं मुर्दा नहीं होना चाहता, संगीता डार्लिंग। तुम जाओ, मैं वापस उस अँधेरी, नाकारा और उजाड़ दुनिया में नहीं लौट सकूँगा। मुझे पाने के लिए तुम्हें थोड़ा पहले आना चाहिए था।"

'क्यों? क्या अब तुम किसी और को पाना चाहते हो?" संगीता के भीतर नारी-जनित ईर्ष्या ने अचानक सिर उठा लिया।

'मैं अब इस 'पाने' और 'खोने' की दलदल को पीछे छोड़ आया हूँ।"

"तो?"

'तो कुछ नहीं," भुवन ने तड़प कर जवाब दिया, 'मुझे जाने दो, एक नयी दुनिया मेरे सामने पड़ी है।"

"मगर मैं क्या करूँ?" संगीता तड़प उठी।

"तुम इस नयी दुनिया का अर्थ समझने की कोशिश करो और जब समझ लो तो मुझसे मिलने वहाँ आना जहाँ जया है रजनी है आशू है, ममगाँई है पुलिस है, जेल है, गोली है, मौत है मगर भय नहीं है, घनाजत नहीं है। जहाँ केवल अर्थ है। जहाँ समय एक शब्द भर नहीं है।" भुवन ने गंभीरता से कहा और संगीता का कन्धा थपथपाकर बोला, "तुम्हारे प्रति कोई नफरत मेरे मन में नहीं है। मैं आज भी तुम्हें उसी शिद्दत से

प्यार करता हूँ। प्यार की उसी गर्माहट और गहराई को मैं सम्हाले रहूँगा और तुम्हारा इन्तजार करूँगा। तुम आना...तुम जरूर आना।" भुवन ने संगीता का कन्धा दबाया और इससे पहले कि कोई भावुक याद उसे धराशायी करती वह संगीता को छोड़कर भाग लिया।

"मैं जरूर आऊँगी।" संगीता चीखी और फूट-फूट कर रो पड़ी।

तभी धांय-धांय की तेज आवाजों से पहाड़ हिलने लगा। शायद, जुलूस पर गोली चली थी।





धीरेन्द्र अस्थाना

जन्म . सन् 1956 के दिसम्बर महीने की 25 तारीख 25 दिसम्बर 1975 को अपनी पहली बहुचर्चित और विवादास्पद कहानी 'लोग/हाशिए पर' (प्रकाशन अप्रेल 1976) से लेकर दिसम्बर 1981 तक के इस छह वर्षीय समय में कुल जमा सत्रह कहानियां और एक उपन्यास लिखकर हिन्दी साहित्य में अपना एक विशिष्ट और उल्लेखनीय स्थान बना लेने वाले युवा हस्ताक्षर धीरेन्द्र अस्थाना की इससे पहली तीन पुस्तकें है 'लोग/हाशिए पर' (कहानी सग्रह), 'आदमीखोर' (लघु उपन्यास व अन्य कहानियां), तथा 'कथाखण्ड एक' (सम्पादित कहानी सकलन) ।

सम्प्रति : राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० दिल्ली मे कार्यरत ।

पता : 82, सफदरजग हॉस्पिटल क्वार्टर्स, राजनगर नयी दिल्ली-110029